गज़ल

श्री कृष्ण गोपाल राही :- पिता- स्वर्गीय श्री बृज किशोर मिश्र एवं माता- श्रीमती फुलवरिया मिश्र, जन्म- 12 अगस्त 1951। वर्ष 1981 से पत्र- पत्रिकाओं में कविता, गीत, गजल का प्रकाशन एवं आकाशवाणी जबलपुर व रीवा से कविताओं का प्रसारण।

प्रकाशित कृति- गजल संग्रह एवं पनाहगारों से दूर, विश्व हिंदी महाघोष तथा कादम्बरी संस्था जबलपुर द्वारा सम्मानित।

''दर्द भरी आँसू की भाषा, क्या भूलें क्या याद रखें''

आँखों में अंकित अभिलाषा, क्या भूलें क्या याद रखें.
एक अधूरापन पूरा कर पाने का विश्वास लिए
जंगल - जंगल भटकी आशा, क्या भूलें क्या याद रखें.
इस घर के कोने - कोने में अपना ही प्रतिबिम्ब भरा
जीवन की बदली परिभाषा, क्या भूलें क्या याद रखें.
संभव के सम्मोहन में पल - छिन बीते दिन बीत रहे
घिरती जाती घोर निराशा, क्या भूलें क्या याद रखें.
शब्दों की उलझी गाँठें खुल पाएं भी कैसे 'राही'
सेंध लगा बैठी संभाषा, क्या भूलें क्या याद रखें.

(संभाषा = कूट भाषा.)

''ज़िंदगी को नया सिलसिला मिल गया''

एक बुत में हमें देवता मिल गया.
मेरी छोटी सी दुनिया में क्या बात है
आसमाँ घर मेरा झाँकता मिल गया.
रुक रहा था सफ़र ज़िन्दिगी का मगर
एक परिन्दे से फिर हौसला मिल गया.
डर खड़ा था जहाँ रास्ता रोककर
बस वहीं से नया रास्ता मिल गया.
उम्र भर उसने की ख़िदमतें आपकी
आपने क्या दिया, उसको क्या मिल गया.
तुम मिले तो लगा आज जैसे मुझे
कोई बच्चा रहा लापता, मिल गया.
बाद मुद्दत के पहचान खुद से हुई
रास्ते में कि जब आइना मिल गया.

(बुत = मूर्ति.)

''दर्द की बारिशों में अचानक यहाँ कोई हँसता मिला''

बस इसी बात पर आज कुहरा गुबारों से उलझा मिला.
आज़माने लगा जब हवा को तो मंज़र भी था इस तरह
आसमाँ के निशाने पे बादल हरिक सिम्त बिखरा मिला.
शर्म से झुक गई थीं वो शाखें तो कुछ फूल बिखरे भी थे
रात के आँसू पी कर वहीं पर कोई फूल उम्दा मिला.
मैंने काग़ज़ की चिड़िया थमा दी उसे प्यार से चूमकर
एक नंगा - धड़ंगा सा बच्चा मुझे मुस्कराता मिला.
बस अभी कुछ दिनों से हुआ क्या कई लोग गुमसुम से हैं
आ रही है यहाँ पर क़यामत कोई शख़्स कहता मिला.
ये ग़रीबों की बस्ती बसे भी कभी और उजड़ जाए भी
लेके अर्जी अदालत की सीढ़ी मेरा गाँव चढ़ता मिला.

(सिम्त = तरफ़ क़यामत = प्रलय.)

''धूप में हम पसीना सुखाते रहे''

वो हमारा नमक ले के जाते रहे.
पाँव फैलाए पसरा अँधेरा रहा
लोग आँगन का सूरज चुराते रहे.
जब तलक थीं सिफ़ारिश की बैसाखियाँ
रास्ते में क़दम लड़खड़ाते रहे.
साँस का जब सबा से बढ़ा फ़ासला
ज़िन्दिगी को धुआँ से चलाते रहे.
खाने - पीने की कोई कमी तो न थी
रोज़ दरबार दर पर लगाते रहे.
भीख मिलती नहीं जब से कर्फ़्यू लगा
लुत्फ़ ख़ैरात का भी उठाते रहे.
जिस्म बिकता न था जबकि बाज़र में
लोग चलती सड़क पर बिछाते रहे.

(सबा = प्रात: कालीन हवा. लुत्फ़ = आनंद)

कहानी के हरेक अंदाज़ पर किरदार बदलेगा
ज़रूरत के मुक़ाबिल इल्म का संसार बदलेगा.
हमें शक़ है कि पहुंचा पाए भी कश्ती किनारे तक
जो माझी हर लहर पर हाथ की पतवार बदलेगा.
पसीना सींचकर दिन – रात जो फ़स्लें करे हासिल
वो क्या कचरा से इन खेतों की पैदावार बदलेगा.
नहीं ऐसा नहीं है फिर से आ सकती है खुशहाली
हमारे साथ गर बाज़र का व्यवहार बदलेगा.
हुई है इन दिनों कुछ तेज़ हलचल इस इलाके की
हमें लगता है इस जागीर का मुख़्तार बदलेगा.
बदल जाए अगर दुनिया क़यामत क़हर भी ढाए
लिखा माज़ी का कोई भी नहीं अश्आर बदलेगा.
सियासत के कई पेंचों से वाक़िफ हो गया शायद
सुना है अब हमारे शहर का अख़बार बदलेगा.
किरदार = पात्र. मुक़ाबिल = सम्मुख. मुख़्तार = व्यवस्थापक. क़हर = क्रोध, कोप. माज़ी = अतीत.

यहाँ क़छ लोग अपने आशियाने छोड़ कर निकले
लपेटे आसमाँ चेहरे पे वो दिन – दोपहर निकले.
ये बच्चे उँगलियाँ पकड़े चले जाते बुज़ुर्गों की
समय के कारनामों से अमूमन बेख़बर निकले.
यहाँ सरसब्ज़ जंगल में मिलेंगे लोग, सोचा था
मगर पेड़ों के झुरमुट से भी वहशी जानवर निकले.
पहाड़ों का अँधेरा चीरता सा कारखाना है
जहाँ गुमनाम बस्ती के हज़ारों दफ़्न घर निकले.
चलो इन झाड़ियों के आगे – पीछे झाँक कर देखें
यहीं से हो न हो आख़िर कोई बेहतर डगर निकले.
ज़मीं उम्मीद की शायद नहीं रह पाएगी बंजर
अगर सूखे इलाके से नदी होकर नहर निकले.
तो मैंने अपनी तैयारी सफ़र की मुल्तवी कर दी
बदल कर भेस जब कूचे से मेरे हमसफ़र निकले.
अमूमन = प्राय:. दफ़्न = गड़े हुए. मुल्तवी = स्थगित.

सम्पर्क- कृष्ण गोपाल राही
ग्राम व पोस्ट-अँजोरा (त्योंथर),
जिला-रीवा (मध्य प्रदेश) पिन-486220
मोबाइल – 9826341789, 6263348141

खजुराहो का शिल्प

दिनेश प्रताप सिंह परिहार :- गढ़ी कोंडर, तह. नागौद, सतना (म.प्र.) - ऐतिहासिक संदर्भों पर कलम चलाने वाले दिनेश प्रताप सिंह की रुचि भारतीय संस्कृति और पुरातत्व में है। कई पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले डी.पी. सिंह परिहार गहराई से विषय का अध्ययन करते हैं, शोध-स्थल की यात्रा करते हैं और स्थानीय इतिहास के सुसंगत तथ्यों को संजोकर ले आते हैं। कई वर्षों से निर्बाध एवं अनवरत लेखन जारी। समाजसेवा के क्षेत्र में विभिन्न सामाजिक संगठनों लायन्स क्लब, भारत विकास परिषद्, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा, मानस मण्डल, चिन्मय मिशन रीवा के ट्रस्टी एवं संरक्षक सदस्य तथा विन्ध्य सांस्कृतिक मंच जबलपुर के सक्रिय सदस्य हैं।

नाम तो याद नहीं पर शायद कहीं पढ़ा है, उस अँग्रेज के बारे में जो कि स्थानीय ग्रामीणों से सूचना पाकर बीहड़ में आदिवासियों के साथ अंदर तक घुस गया था। लम्बी दूरी पार करके जब वह अँग्रेज थका हारा, भूखा प्यासा जंगल के बीच स्थित खुर्जरवाह के मंदिरों के सम्मुख पहुँचा तो उसकी आँखे फटी की फटी रह गईं। खजुराहो के देव मंदिर का चमत्कृत कर देने वाला सौन्दर्य उस अँग्रेज को अपनी गिरफ़्त में ले चुका था। यही वह व्यक्ति था, जिसने खजुराहो के मंदिरों को पूरी दुनिया में प्रसिद्ध कर दिया।

खजुराहो के ये प्राचीन भव्य मंदिर क्षेत्र मध्यप्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र के छतरपुर जिले में स्थित हैं। चन्देल काल में यह जेजाकभुक्ति कहलाता था। नख से शिख तक कला से परिपूर्ण यह मंदिर चंदेल वंश के उत्कर्श काल की अनुपम देन है। पहले इस शालीन और अनुपम ऐश्वर्य पूर्ण मंदिरों की संख्या 85 थी, जिसमें अब 30 मंदिर ही सुरक्षित बचे हैं।

इन मंदिरों का सम्बन्ध किसी एक धर्म से न होकर शैव, वैष्णव और जैन तीनों धर्मों से था। जहाँ तीनों धर्मों के मंदिर लगभग एक आकार-प्रकार एवं शैली में बने मिलते हैं। अन्तर केवल धर्म अनुसार इष्ट देव की मूर्ति की स्थापना में है। मंदिरों का निर्माणकाल सामान्यत: 950 ईस्वी से 1050 ईस्वी के बीच माना जाता है।

समूचे विश्व में प्रसिद्ध खजुराहो के ये मंदिर स्थिति की दृष्टि से तीनों समूहों और समय की दृष्टि से भी तीन कालों के हैं। पश्चिमी मंदिर समूह में 11 केन्द्र हैं, जिनमें 64 योगिनी, ललगुआ, मतंगेश्वर, वाराह, लक्ष्मण, प्रवेश द्वार, विश्वनाथ, पार्वती, चित्रगुप्त, जगदम्बा और कन्दरिया मंदिर हैं। पूर्वी समूह में 6 केन्द्र हैं, जिनमें हनुब्रह्मा, खखरा वामन, जवारी घण्टाई, पार्श्वनाथ, आदिनाथ और शांतिनाथ मंदिर तथा जैन संग्रहालय है। दक्षिण मंदिर समूह में दूल्हादेव और चतुर्भुज मंदिर हैं। दूल्हादेव शिव के बुद्ध संस्करण हैं।

मूर्तिकला की दृष्टि से खजुराहो की मूर्तियों को 5 भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में वे मूर्तियाँ रखी जा सकती हैं, जो मंदिरों में पूजार्थ थीं। यह मूर्तियाँ प्राय: चारों ओर से कोर कर बनाई हैं। यह समभंग खड़ी हैं। द्वितीय वर्ग में देवताओं की मूर्तियाँ आती हैं, जो मंदिर की जंघाओं में उत्कीर्ण हैं। तृतीय वर्ग में अप्सराएँ अथवा सुर-सुन्दरियाँ आती हैं, जो खजुराहो की सर्वोत्तम मूर्तियाँ हैं। यह देवताओं की अनुचारियों के रूप में विभिन्न क्रियाकलापों को करती, अँगड़ाई लेती, भीगी बेडियो से जल निचोड़ती, पैरों में काँटा निकालती, शिशु को दुलारती, पत्र लिखती तथा क्रीड़ा करती दिखाई पड़ती हैं। चतुर्थ वर्ग में धर्मेत्तर मूर्तियाँ हैं। इसके विविध विषय हैं, जैसे - युद्ध, आखेट, परिवार के दृष्य, गुरु-शिष्य, संगीत और नृत्य में तल्लीन नर-नारियाँ, मिथुन युगल आदि। पंचम वर्ग में पशु मूर्तियाँ आती हैं, जिनमें शार्दूल, अश्व, हस्ति आदि प्रमुख हैं।

श्री कृष्णदेव के अनुसार खजुराहो में जितने अधिक देवता अपनी शक्तियों के साथ आलिंगन रूप में प्रदर्शित हैं, उतने अन्यत्र कहीं नहीं। शिव-पार्वती, लक्ष्मी-नारायण की अनेक मूर्तियों के अतिरिक्त राम और सीता, बलराम और रेवती, परशुराम और उनकी शक्ति, ब्रह्मा और सावित्री, गणेश और विघ्नेश्वरी, इंद्र और

शची, अग्नि और स्वाहा, कुबेर और सिद्धि देवी, काम और रति आदि के चित्रण दर्शनीय हैं।

खजुराहो शिल्प की सबसे बड़ी विषेशता उनकी काम प्रदर्शित करती मूर्तियाँ हैं। अधिकांश मूर्तियाँ कामवासना से वशीभूत दिखाई गई हैं। देवताओं की प्रतिमाओं में भी आलिंगन का तत्व समाहित है। अनेक प्रेमी युगल प्रगाढ़ आलिंगन के बद्ध हो वासनात्मक भाव लिये हुए दिखाए गए हैं। इतना ही नहीं कहीं-कहीं पर योगियों और साधुओं को भी कामासक्त दिखाया गया है। जन सामान्य और पशुओं के परस्पर रति क्रीड़ा के अनेक दृश्य यहाँ के मंदिरों में उत्कीर्ण मिलते हैं।

यह एक विचारणीय प्रश्न है कि, देवी-देवताओं के मंदिर प्राय: पूजा और श्रद्धा हेतु बनते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक होता है, फिर ऐसे स्थलों पर क्रीड़ा में लीन प्राणियों की आकृतियाँ क्यों बनाई गईं? इस तारतम्य में कुछ विद्वानों का कहना है कि, ये मूर्तियाँ मत्तमयूरी सम्प्रदाय के प्रभाव के कारण बनाई गई। कुछ अन्य लोगों का कहना है कि, शैव धर्म के कोल कपालिक सम्प्रदाय के प्रभाव के कारण बनाई गईं। कुछ विद्वान इनमें बौद्ध धर्म के वज्रयान या सहजयान सम्प्रदाय अथवा शैव के शाक्त सम्प्रदाय का प्रभाव मानते हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि, कामशास्त्र में विशेषकर वात्सायन के कामसूत्र में रति क्रीड़ा की जो मुद्राएँ बताई गई हैं, उन्हें यहाँ के मूर्तिशिल्प में प्रदर्शित किया गया है।

लोक मान्यता है कि, मंदिरों में बिजली (तड़ित) से बचाने के लिए मंदिर में मैथुन कलाकृतियाँ बनाई गई हैं। ऐसा माना जाता है कि, विद्युत देवी कुआँरी हैं। अत: वह ऐसी जगह पर नहीं जाएगीं जहाँ इस तरह का चित्रण है। अत: मंदिर के ऊँचे शिखरों पर बिजली गिरने का कोई भय नहीं रहेगा।

डॉ. भगवतशरण उपाध्याय के अनुसार उस काल के पुजारी और धर्माचार्य जिस विधि से कामुक जीवन बिताते थे, उस पर भविष्य में दोषारोपण या आक्षेप न लगाया जा सके या तत्समय उनके इस आचरण को अपमानित करते हुए पद छोड़ने पर विवश न किया जा सके। अत: उसे धर्म सम्मत् बनाने के लिए यौन आचरण को उनके द्वारा मंदिरों पर उत्कीर्ण कराया गया।

कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार अध्यात्म के रास्ते में चूँकि तरह-तरह के आकर्षण भरे पड़े हैं, जिनमें कामवासना सर्वोपरि है। वह भक्त जो इन आकर्षणों में नहीं उलझता वही अपने आराध्य तक पहुँच पाता है। इसीलिए गर्भगृह में आराध्य की स्थापना की गई है। भटकने वाला भटक कर आध्यात्मिक मार्ग से दूर हो जाता है और जन्म जन्मान्तर तक मोक्ष के मार्ग से दूर रहता है। यानी मोक्ष प्राप्ति के लिए तमाम आकर्षणों से परहेज करते हुए सिर्फ अपने आराध्य का ध्यान रहे, यही संदेश इन मंदिरों का है।

खजुराहो की कला जिस जीवन, शैव दर्शन से अनुप्रमाणित है, वह स्वत: सौन्दर्य में शिव को, सत्य को, शक्ति को प्रतिष्ठित करती है। वह स्त्री-पुरुष के सौन्दर्य दर्शन को नरक या पाप का मूल द्वार न मानकर जीवन और ब्रह्माण्ड व सहविरत्री मानती है। बकौल प्रोफे. आदित्यप्रताप सिंह, वह यूरोप की आदिम और अन्तिम पाप दृष्टि से भिन्न है; क्योंकि वह जीवन से अभिन्न है। इसी से गतिशील है।

शिव, शिवा के बिना शव है। वह शक्ति सापेक्ष है। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् का मूलाधार ऊर्जत्व है। अत: यह जीवन का जीवन्त दर्शन सौन्दर्य की जीवन्त अभिव्यक्तियों को अमंगलकारी नहीं मानता। मूल अभिप्राय कामोपासना नहीं है। मूल उद्देश्य तो अशिव, काम को पराभूत करते हुए शिव की ओर अग्रसर होना है। यह शिव संकल्प ही मंदिरों में शिल्पित है, जिसे खजुराहो जाकर देखा जा सकता है।

से.नि. सेल्स टैक्स ऑफीसर
''उपवन कोठी'' राजीव गांधी पार्क के पास
नेहरु नगर, रीवा
मो.- 9826185564

अपनी एक बिरादरी साहित्यकारों की भी

बाबू लाल दाहिया :- सतना जिले के पिथौराबाद ग्राम 1944 में जन्म लेने वाले सर्जनात्मक सक्रियता एवं क्रियाशीलता की ऊर्जा लोक जीवन से प्राप्त करते हैं। एक ओर जहाँ वे बघेली परम्परा, भाषा व साहित्य को समृद्ध करने के लिए प्रयासरत् हैं, वही दूसरी ओर जैव विविधता पर किए गये कार्यों के लिए उनकी राष्ट्रीय पहचान व प्रतिष्ठा है। उन्होंने ने लगभग 200 से अधिक किस्मों की परम्परागत देशी धान की किस्मों का संग्रह कर उनके अभिवृद्धि में लगे हैं। साहित्य के क्षेत्र में भी उनकी रचना धर्मिता निरन्तर प्रवहमान है। दो बघेली काव्य संग्रह, माटी और पसीना हमरे बद है के अतिरिक्त लोक भाषा और जीवन से संबंधित, समानन केरु थाती जनपदीय संस्कार गीत, जनपदीय आख्यान, जनपदीय पहेलियाँ, जनपदीय खेलगीत प्रकाशित बघेली शब्दकोष, बघेली मुहावरे व कहावतें, बघेलखण्ड का अद्‌भुत प्रेमगीत टप्पा, बघेलखण्ड के पर्वगीत, जनपदीय लोक कथाएँ प्रकाशाधीन। देशबन्धु, नवभारत में 12 वर्षों तक स्तम्भ लेखन। आकाशवाणी दूरदर्शन से कविताओं, कहानियों वार्ताओं का एवं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक संस्थाओं द्वारा आंचलिक एवं राष्ट्रीय स्वर के पुरस्कार **भारत सरकार द्वारा पद्म श्री सम्मान**। अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध।

मित्रों यह फारसी भाषा का शब्द, बिरादर, पता नही हमारे गांव की बोलचाल की भाषा में कब शामिल हो गया ? पर मैं इसे अपनी 3, 4 साल की अवस्था से न सिर्फ सुनता आया हूं बल्कि अर्थ भी समझते आया हूं।

रियासती जमाने में बिरादर का बहुत बड़ा महत्व था। गाँव का हर व्यक्ति किसी न किसी बिरादरी के गिरफ्त में ही रहता था।

कोई अपरचित गाँव मे आता तो सबसे पहले लोग उसकी बिरादरी ही जानने का प्रयास करते। गली चलन्ते भी कोई किसी से हाथ मिलाते दिखता तो उसका अर्थ यही था कि,, वह उस ब्यक्ति के जाति बिरादरी का ही है।,, कुछ लोग पूछ भी लेते कि,, को आहीं ?,, तो वह कहता ,, अमुक गाँव के बिरादरै आही ।,,

यहां तक कि बकायदे गांव परगना और समूचे रियासत के बिरादरी मुखिया होते व छोटे मोटे झगड़े बिरादरी पंचायत ही निपटा लेती। पावर इतना कि पता नही कब किस चूक में बिरादरी दण्ड से किसे दंडित कर दे ?

एक बार एक ब्यक्ति मर्डर के केश में 12 साल बाद जेल से छूट कर आया। पर बिरादरी भला कब सन्तुष्ट होने वाली थी ? उसके गाँव में आने पर बिरादरी की सभा बैठी और बिरादरी दण्ड भरने के बाद ही वह घर मे प्रवेश एवं साथ मे बैठ कर हुक्का पानी पीने का अधिकारी बना। अपन तो कई बिरादरी के सदस्य है। जाति बिरादरी, देसी अनाज संरक्षक बिरादरी, पर्यावरण संरक्षक बिरादरी, आदि आदि।

पर इन सब से अलग अपनी एक बिरादरी साहित्यकारों की भी है।

यह साहित्यकारों वाली बिरादरी रेयर ही नहीं बहुत रेयरिष्ट पाई जाती है।

ठीक उसी प्रकार जैसे हजार दो हजार मबेसियो में एक दो हरहा य गरियार ।

पर दण्ड देने में यह बिरादरी भी पहली वाली से राई रत्ती भी कम कहाँ ? पता नहीं कब किस को अपनी गोष्ठी से बंचित कर दे और फिर वह बिज्ञापनी कवि अपने नाम के आगे कवि फलाते व पीछे एक उप नाम की दुम लगाये टापते ही बैठा रह जाय।

इस बिरादरी के सदस्यों को अपनी रचना सुनाने की बड़ी उत्कंठा होती है।

उनके बारे में हमारे मित्र अरुण नामदेव जी एक बड़ा ही मजेदार चुटकुला सुनाया करते हैं कि,

एक बार एक कवि जी बीमार हुए और समाचार सुन उनके एक सगे रिस्तेदार देखने के लिए आ पहुंचे। उन्हें अचेतावस्था में देख रिस्तेदार ने दु:ख जताते हुए कहा कि, हमारे कवि जी लगता है हमे छोड़ कर अब चले ही जाय गे ? हम भला उतनी अच्छी कविता किससे सुनेंगे ? हम तो अब उनके बिना अपने को जिंदगी भर अनाथ सा ही महसूस करते रहेंगे।

अपनी कविता की बात सुन कवि जी के शरीर में जुम्बिश हुई और वे बोले अभी बिस्तर में पड़े-पड़े जो कविता मैंने लिखी थी वह तो आप को सुनाया ही नही ? उसे सुनेंगे तो तबियत मस्त हो जायेगी ? और फिर लगे अपनी अखण्ड कविता का पाठ करने।

जैसे जैसे कविता आगे बढ़ी उनका जोश भी उत्तरोत्तर बढ़ता गया। फिर जब कोई घर का सदस्य उन्हें दवा खिलाने के लिए कमरे में आया तो देखा कवि जी तो खाट में उकड़ बैठे कविता पढ़ रहे है पर रिस्तेदार बेचारे जमीन में बिहोश पड़े है।

देखा आप ने हमारी इस बाली बिरादरी का कमाल ?

- बाबूलाल दाहिया

भोले बाबा के गीत

हमारे बघेली में अनेक तरह के लोक गीत गाए जाते थे जिनमें अब कुछ चलन से बाहर भी होते जा रहे हैं। यदि हम उन्हें अलग-अलग बिधाओं में विभाजित करें तो तीन प्रमुख श्रेणियों में बांट सकते हैं। वह हैं -

1. संस्कार गीत
2. जातीय गीत
3. पर्व गीत

संस्कार गीत जहां पुत्र जन्म से लेकर विवाह तक छठी, बरहों, कुँआपूजन, द्वारचार, भमरी, परछन आदि तमाम सांस्कृतिक अवसरों में गाए जाते हैं, वहीं जातीय गीत किन्ही जाति विशेष के गीत होते हैं जिन्हें दादर, बिरहा, करमा ,सजनई आदि नामों से जाना जाता है।

यूं तो देख गया है कि प्राय: हर मेहनत कस जातियों के अपने-अपने जातीय गीत थे पर उन्हीं-उन्हीं के जिनके काम कुछ साधारण श्रम युक्त थे। लौह शिल्पी, लकड़ी शिल्पी फिर भी उसके अपवाद हैं। लगता है दिन भर हथौड़ा पीटते य कुल्हाड़ी बसूला चलाते वे इतना थक जाते रहे होंगे कि रात्रि भोजन के पश्चात उन्हें फिर खाट ही दिखती थी।

परन्तु तीसरे श्रेणी के गीत ''पर्व गीत'' वह गीत हैं जो होली, दीवाली के समय गाये जाते हैं। क्वार एवं चैत्र माह में दुर्गाष्टमी - नवमी में देवी देवताओं के पूजा उपासना य जबारे विसर्जन के समय गाये जाते हैं। पर्व गीत के ही अन्दर एक गीत और आता है जो **''भोले बाबा के गीत'' नाम से जाना जाता है। इस गीत को लोग तीर्थ यात्रा करने जाते समय गाते थे।**

प्राचीन समय में जब आज जैसे यातायात के साधन नही थे तब लोग 15-20 के समूहों में प्राय: हर वर्ष ऐसी एकाध सप्ताह की लम्बी तीर्थ यात्राएं करते और उस यात्रा के समय इन गीतों को गाते हुए जाते थे। इन्हें हमारे यहां ''भोलेबाबा के गीत'' कहा जाता था पर यही गीत बुंदेलखंड में लमटेरा हो जाता था।

अगहन मास तक जैसे ही किसानों के खेतों की गेहूं चने की बुबाई और धान कोदो की कटाई गहाई पूरी हो जाती तो पूस - माघ के महीनों में बघेल खण्ड के लोग अक्सर चित्रकूट, बांदकपुर, प्रयागराज य वाराणसी आदि तीर्थो की लम्बी यात्रा किया करते थे। कुछ लोग तो नर्मदा परिक्रमा में भी जाते। यहां तक कि 19वीं सदी के पहले जब आज जैसे रेल यात्रा के साधन नही थे उस समय तो यह तीर्थाटन बद्रीनाथ, केदारनाथ एवं रामेश्वरम तक का पैदल ही होता था जिसमें आते जाते ही 6 माह बीत जातेथे।

यात्रा श्रम साध्य हो, वह दुरूह न लगे एवं पैदल चलते उन तीर्थों में आराम से पहुंचा जा सके अस्तु उस यात्रा को सरस बनाने के लिए समस्त रास्ते गीत गाते हुए ही चलते थे। यहां तक कि गांव से निकलते समय भी समस्त लोग जब उन्हें गांव की सीमा के बाहर तक पहुंचाने जाते तो उनकी वह बिदाई भी उसी भोले बाबा के गीत के साथ ही होती ।इन गीतों की ओर ध्यान बंटा रहने के कारण पैदल यात्रा की सैकड़ों किलो मीटर की वह दुरूहता उन्हें जरा भी नही अखरती थी।

यूं तो भोले बाबा के गीत प्राय: देवी देवताओं और शिव पार्वती से सम्बंधित होते थे, इसीलिए शायद उन्हें (भोले बाबा के गीत) कहा जाता रहा होगा ? पर बीच-बीच में कुछ घर ग्रहस्ती की बातें भी आती रहतीं थीं। इन गीतों की एक विशेषता यह भी है कि इनमें एक पंक्ति से दूसरे की तुक कहीं भी नहीं मिलती फिर भी लयात्मकता पूरी तरह बराबर होती है। यहां कुछ गीत प्रस्तुत हैं-

अबय के गए कबय अइहा हो,कबय अइहा हो जब गोहूँ निपुस अई बाल हो। अबय के गए ?

दरस की तो बेरा भई हो,

बेरा भई हो पट खोलो, छबीले भैरम लाल हो। दरस की तो-

झुलनिया तो गउरय सोहै हो,

गउरय सोहै हो जिनके दाँते, बतीसी गोरे गाल हो। झुलनिया तो-

अंतर की तो दुइ दुइ सिसियां हो,

दुइ दुइ सिसियां हो एक सांझा चढ़ाऊँ दूजी भोर हो। अँतर की तो-

निकर चला दइके टटिया हो,

दइके टटिया हो कउने माया,म फंसे हैं परान हो। निकर चला-

निकर चला ओही देशरा हो,

ओही देशरा हो संघ गउरा बिराजे भोले नाथ हो। निकर चला-

सड़किया म नेब्बू लगे हो,

नेब्बू लगेहो कउनव जत्री चुहुक रसलेय हो। सड़किया मे तो–

कुठुलिया तो खाली परी रे,

खाली परी रे, तरछी मरकी धरीहैं अउधान रे। कुठुलिया तो–

ननद मोरी बटुआ जइसी रे,

बटुआ जइसी रे ननदोइया,

हैं पटिहा पुरान हो। ननद मोरी हो–

गरज अइसा बाउर होइ गय रे,

बाउर होइ गय रे भुइयां होइगै, गहन कउड़ी मोल रे। गरज अइसा हो–

सुरतिया तो तोसे लगी रे,

तोसे लगी रे भोले बाबा, दरस कब होंय रे। सुरतिया तो–

गरीबी मोरी भोले सुना हो,

भोले सुना हो बाकी कोऊ, सुनइया नही आय हो।

गरीबी मोरी हो–

नजर भर देखय न पायव रे,

देखय न पायव भोले होइगे, नजरिया के ओट हो। नजर भर–

नजरिया तो तोसे लगी रे,

तोसे लगी रे,

वंशी वाले ,से लगे हैं परान रे।

नजरिया तो–

सयानी बिटिया घर म बइठी रे,

घरमा बइठी रे पीले होइहैं, काहे के माथे हाथ हो।

सयानी बिटिया रे–

नर्मदा मइया उलटी बहैं हो,

उलटी बहय हो जइसय मिल रहिं, महतारी अउर बाप हो। नर्मदा मइया हो–

इस तरह लम्बे रास्ते तय करते समय सैकड़ों ऐसे मौखिक परम्परा के यह गीत गाए जाते थे जिनमें धार्मिकता के साथ –साथ घर गृहस्थी की भी अनेक सम सामयिक समस्या देखी जा सकती थी अब। पर कुछ समय से तीर्थ यात्रायें पैदल होना लगभग नगण्य हो गई हैं। हर स्थान पर सड़क और आवागमन के संचार साधन सुलभता से उपलब्ध हैं अत: यह गीत सुनने को नही मिलते।

– बाबूलाल दाहिया

बघेली गीत

दीपक तनहा, पिता- स्मृतिशेष श्री अम्बिका प्रसाद श्रीवास्तव, माता- स्मृतिशेष श्रीमती कमला देवी श्रीवास्तव, जन्म स्थान- शहीद भगत सिंह वार्ड क्र. 1, निवास- नगर परिषद त्योंथर, जिला-रीवा (म.प्र.), जन्मदिन तिथि- 19/01/1963, योग्यता- स्नातक संप्रति- जल संसाधन विभाग में कार्यरत, गीत संग्रह- सो जा! मेरे नयन (अप्रकाशित)

कैसे बच पाये - अपना घर आंगन

तपता सूरज तपे चंद्रमा जलता नीलगगन।
ऐसे में कैसे बच पाए अपना घर आंगन।।

बदल गई मौसम की काया पीले पात हुए।
आम्रकुंज को छोड़ उड़ चले जंगल ओर सुये।।

रेतीली बयार छू आई हरा-भरा मधुबन।
ऐसे में कैसे बच पाए अपना घर आंगन।।

राहों के पदचिन्ह मिटे मंजिल जाने वाले।
पगडंडी की धूल उगाती रोज नए छाले।।

धूप चढ़ी शाखों पर करती खुलेआम नर्तन।
वैसे मैं कैसे बच पाए अपना घर आंगन।।

झरनों का हो गया समर्पण झील हुई सूनी।
ताल, तलैया, पोखर लगते साधू की धूनी।।

नदियों का पानी कगार से करके चला नमन।
ऐसे में कैसे बच पाए अपना घर आंगन।।

ग्रीष्म के दोहे

सूरज ने खारिज किया, जल की दया अपील।
सजायाफ्ता हो गए, ताल तलैया झील।। (1)

नदियों का पानी मरा, तट हैं पड़े अचेत।
खबर सुनाने चल पड़ी, कफन डाल के रेत।। (2)

बद् से बद्तर हो गए, गर्मी के हालात।
कर्फ्यू जैसे दिन लगें, जेल सरीखी रात।। (3)

मैदानों को छोड़कर, जाकर बसी पहाड़।
गर्म हवा ने शीत के, तंबू दिये उखाड़।। (4)

खुलेआम झुलसा रहा, दरवाजा मत खोल।
डीजल जले लुआर का, पछुआ का पेट्रोल।। (5)

अंधड़ की दीवानगी, फिर कर बैठी भूल।
बंजारिन सी घूमती, रस्ते रस्ते धूल।। (6)

जहां तलक भी जाइये, नही पड़ेगा फर्क।
फुल टावर मौजूद है, गर्मी का नेटवर्क।। (7)

कड़ा प्रशासन धूप का, चाक और चौबंद।
कोई भी निकला नहीं, बिना किए मुंह बंद।। (8)

हुआ तपेदिक धार को, सभी घाट बीमार।
मछली अब जाए कहां, करवाने उपचार।। (9)

होने को तैयार है, विदा पिया के संग।
हरियाली के हाथ में, चढ़ा हल्दिया रंग।। (10)

सूखी धरती छोड़कर, नमी गई पाताल।
अपरस जैसे हो गए, तालाबों के गाल।। (11)

बपुरी ज़िंदगी

कबहूं कुरुआ,चहुरी कबहूं बस दुइ मूंठी पाकत ही।
अब ता इआ जिन्नगी बपुरी ऊसर जइसन लागत ही।।
पेटे भरी जेठउहीं भूंभुरि आंखी से चउमास झरय।
जिउ गुंगुआय ओद कंडा कस भितरय भीतर लपट फरय।
बड़ी बिपत्ति धरे मुडें मा नेकुअन चना चबाबत ही।। अब ता...

मुखिया घर मजदूरिन होइ गै सब कुछ होय किहिस आपन।
नागपचइयां, झूला, कजरी ना जानिब कब गा सामन।
उहय मंजूरी,उहय चेरउरी रातौ दिन दोहराबत ही।। अब ता...
हाथ जोड़ चिहरान बेबाई रोइ गाइ भिनसार करय।
बीता दुआ बीता सुख खातिर दुक्खन केर पहार चढ़य।
आपन टपकत घाउ बिसरि के अउरन के सुहुराबत ही।। अब ता...

- दीपक तनहा

कवितायें

अवध प्रताप शरण, जन्मतिथि – 24/12/1945, जन्मस्थान– अजयगढ़ पन्ना (मध्यप्रदेश), शैक्षणिक योग्यता– स्नातकोत्तर (अंग्रेजी साहित्य), कार्यानुभव– अवकाश प्राप्त प्राचार्य (स्कूल शिक्षा), निवास– वत्सल विन्यास कोइलारी (शहडोल), सम्मान– मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन जिला इकाई उमरिया का गीत ऋषि सम्मान।

पीयूष वर्षा

बाँसुरी के बुलाते हुए बोल सुन के
हुए रतिभवन कुंज कानन यमुन के

इंद्रधनु पर सुमनबान संधानती
सांझ घन से घिरी रसवती सी हुई
बूँद रिमझिम हुई,भूमि की भाप से
गंधबोझिल पवन मधुमती सी हुई

न्योतते सुर दिशाओं में गुंजित हुए
राग में रँग गये पीत तंदुल सगुन के

मेघ पर मेघ समवेत होने लगे
रंग श्यामल घटाओं के गहरा गये
ऋतुमती यामिनी मुक्तकुंतल हुई
व्योम के वक्ष पर केश लहरा गये

स्वर अधर पर धरी मुरलियों में सजे
मादलों पर थिरकती हुई लोकधुन के

घन सरस हो गये, रस बरसने लगा
अर्थ संकेत के बूझती रात में
मौन स्वीकृति में पलकें झुकी लाज से
बात बनती गई बात की बात में

फूल जैसी खिली रात चंदन हुई
मन महकने लगा रात के फूल चुन के

सर्वनामों का गीत

किसी से किसी नाते से स्वयं को मिला ले कोई
अन्यथा बिना कारण क्यों किसी का पता ले कोई

मुक्ति पाये कभी जो एकांत के अभिशाप से तो
किसी से बात करके बात मन की बता ले कोई

अन्तरंगित तरंगों में भरी विद्युत ऊर्जा है
किसी से बिना बोले कहो कैसे जता ले कोई

तरल हैं, छिपे रहते हैं, पलक में आंसू नहीं तो
किसी को कहाँ सम्भव है नयन में बसा ले कोई

अपनी व्यथाओं की कथा अपने मिलें, तब तो कहें
किसी से क्यों भला अपनी कहानी सुना ले कोई

किसी की कामनायें, कब, कहाँ आकार पा जायें
किसी की देव दुर्लभ देह को धन, बना ले कोई

किसी के लोचनों के मार्ग में, अजाऊँ सम्भव है
अपावन ठौर का कंचन समझ कर, उठा ले कोई

किसी के नयन के प्रतिबिम्ब अपने नयन में भर ले
किसी के उपवनों में सुमन मन के खिला ले कोई

इन सघन वनों में आओ तुम

यह संध्या मोरपंखिनी है
गेरू में रँगी अनमनी है
घिर आये श्यामल बादल हैं
इन सघन वनों में आओ तुम

मद भरे वनों के लोचन हैं
मनचली हवाएं गोपन हैं
वे छू कर सिहरा जाती हैं
इन सघन वनों में आओ तुम

यह बदली कहाँ अकेली है
बदली की निशा सहेली है
दोनों बतियाती आती हैं
इन सघन वनों में आओ तुम

रुक-रुक कर घटा घुमड़ती है
रिस रिस कर मेघ बरसते हैं
हँस-हँस कर पेड़ सरसते हैं
इन सघन वनों में आओ तुम

गिरती हैं बूँदें अलकों पर
अलकें गिरती हैं पलकों पर
नयनों में यमुन उमड़ती है
इन सघन वनों में आओ तुम

कुञ्जों में किसलय छाये हैं
दूर्वा की सेज सजाये हैं
अंधियारे घिरते आते हैं
इन सघन वनों में आओ तुम

मुस्काती मंद चली आओ
मदमाते कुंजर सी आओ
एकांत प्रतीक्षा करते हैं
इन सघन वनों में आओ तुम

वंशी के बोल विहरते हैं
स्वर नूपुर में ध्वनि भरते हैं
सर्वत्र गीत गोविंदम है
इन सघन वनों में आओ तुम

रेशमी प्रहारों का गीत

वाणी ने खोले भाषा के बंद द्वार कितने
अनाहूत आ गए अचानक अलंकार कितने

वे हिमवती हवाएं देह को छू कर चली गईं
मन की घाटी में उग आए देवदार कितने

मोरपंखिया संध्याओं के जंगल पूछ रहे
कुंजवीथियों वाले पल तुम पर उधार कितने

वह छवि कवि के अंतरंग में चपला सी चमकी
नयनों के तेवर होते हैं धारदार कितने

रक्तकमल की पंखुरियों पर बूंदों से बिखरे
दंतधवल मुस्कानों के मीठे अनार कितने

बार-बार उठती गिरती हैं अनियारी पलकें
लोचन संकेतों में करते नमस्कार कितने

किसका जूड़ा खुला, लड़ रहे केश कपोलों से
पवन करे रेशम पर रेशम के प्रहार कितने

चमत्कार सा लगा आपके दर्शन का अवसर
देखेंगे, आगे होते हैं चमत्कार कितने

राम विन्ध्य के रोम रोम में

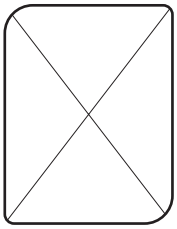

जयराम शुक्ल :- रीवा जिले की सिरमौर तहसील के ग्राम हर्दी के मूल निवासी, 10 मई 1961 को जन्में जयराम शुक्ल पिछले चार दशकों से अधिक समय से पत्रकारिता के कर्म को धर्म के रूप में निर्वाह कर रहे हैं। उन्हे प्रदेश के प्राय: सभी प्रतिष्ठित पत्रों में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है। श्री जयराम शुक्ल की ख्याति परम्परा एवं प्रगतिशीलता को साथ लेकर चलने वाले विश्लेषक रूप मे हैं। उनकी टिप्पणियाँ एवं आलेख प्राय: विचारोत्तजनक होते है और पाठक के मस्तिष्क को गहन विचार हेतु उद्वेलित करते हैं।

जयराम शुक्ल माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के रीवा स्थित क्षेत्रीय केन्द्र के संचालक भी रहे हैं। सम्प्रति वे रीवा में ही रह कर मीडिया कन्सल्टेंसी एवं स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं।

संवत 2077, भाद्रपद कृष्णपक्ष द्वितीया, बुधवार तदनुसार 5 अगस्त 2020 की तिथि इतिहास में एक युगांतरकारी प्रसंग के साथ दर्ज हो गई। हम सब सौभाग्यशाली हैं कि अयोध्या में प्रभु श्रीराम के मंदिर को आकार लेते, साकार होते देख रहे हैं। प्रभु श्री राम किसी एक मंदिर में नहीं समूचे ब्राह्मांड के कण-कण, क्षण-क्षण में हैं। अयोध्या का मंदिर तो हमारी आस्था और स्वाभिमान का विषय है जिसे एक आक्रांता म्लेच्छ ने आहत किया था। हम भाग्यशाली हैं कि हमारे जीवनकाल में यह सब देखने को मिला। किसी कवि ने लिखा **''धरती और अनंत व्योम में, राम बसे हैं रोम रोम में।''**

विश्व में रामकथा सर्वश्रेष्ठ और कालजयी है। तुलसी जैसे सुधी कवियों ने प्रभु श्री राम की विशालता को इतना व्यापक बना दिया कि राम से बड़ा राम का नाम हो गया। प्रभु की उदारता ने **'राम से बड़ा रामकर दासा'** बना दिया। ऐसे अद्भुत प्रसंग विश्व के किसी वांग्मय में नहीं है। रामकथा की यही महत्ता है कि वह जाति-पाँति, धर्म-संप्रदाय से परे सर्वग्राही व सर्वस्पर्शी है।

हम विंध्यवासी पुण्य के भागी हैं... क्योंकि प्रभु के साक्षात चरण यहां की भूमि पर पड़े। वे यहां लगभग 12 वर्ष रहे व अपनी कृपा से वनवासियों को, जन-जन को ऋषि मुनियों को कृतार्थ किया। तुलसी ने रामकथा को लिपिबद्ध करने का काम अयोध्या से प्रारंभ कर समापन काशी में किया लेकिन उनके चित्त में, मानस में चित्रकूट ही बसा रहा। इसलिए वे पूरी रामकथा के सार स्वरूप लिखते हैं-

रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु।
तुलसी सुभग सनेह वन सिय रघुवीर बिहारु।।

वास्तव में वनवासी राम को रामत्व इन्हीं बारह वर्षों में इसी चित्रकूट में प्राप्त हुआ। सो हम विंध्यवासी स्वयं को धन्य मानते हैं। साधक तुलसीदास को हनुमानजी की कृपा से प्रभु श्रीराम के दर्शन अयोध्या- काशी में नहीं चित्रकूट में ही हुए। दोहा प्रसिद्ध है-

चित्रकूट के घाट में भई संतन की भीर।
तुलसिदास चंदन घिसैं तिलक देत रघुवीर।।

तो चलिए जाने राम के इस चित्रकूट के बारे में। चित्रकूट राम कहानी का ही पर्याय है। इसके भूगोल, संस्कृति और अस्तित्व में राम कथा ही रची बसी है। किन्तु चित्रकूट की गौरवगाथा राम के जन्म से पहले ही देश-देशांतरों में व्याप्त हो चुकी थी। यहां के अत्रि आश्रम का उल्लेख पुराणों में है। उनसे भगवान कपिल की बहन और कर्दम ऋषि की पुत्री अनुसुइया का विवाह हुआ था।

गंगा की धारा को चित्रकूट की धरती पर खींचकर लाने वाली अनुसुइया ही हैं, जिसे लोक मंदाकिनी के नाम से जानता है। यहीं पर त्रिदेव, ब्रह्मा, विष्णु, और महेश महासती के सामने पुत्र बनने के लिए मजबूर हुए और बाद में उन्होंने अपने अंशों का प्रतिदान किया। भगवान दत्तात्रेय का जन्म इन्हीं अंशों का साक्षी है।

भगवान शिव के क्रोध रूप दुर्वासा का जन्म भी यहीं हुआ। भगवान राम के आगमन से पहले ही सरभंग, सुतीक्ष्ण और अगस्त्य जैसे अनेक ऋषि चित्रकूट की चौरासी कोस की परिक्रमा के इर्द-गिर्द आश्रय लेकर बैठ गए थे। कहा जाता है कि ब्रह्मा ने देवताओं से कहा था कि वे भगवान राम का सत्कार करने के लिए विभिन्न रूपों में बिखर जाएं। चूंकि चित्रकूट उनकी आश्रय स्थली बनने वाला था इसलिए देवता तमाम ऋषियों के वेष में चित्रकूट क्षेत्र में ही विराजमान हो गए थे।

मत्यगयेन्द्रनाथ आज भी चित्रकूट के उसी तरह राजा माने जाते हैं जैसे उज्जैन में महाकालेश्वर। सत्य यह है कि भगवान शिव ने यहां अपनी लिंग स्थापना भगवान राम के लिए ही की थी। इसलिए यह कहने में कोई परहेज नहीं होना चाहिए कि चित्रकूट की कहानी ही राम की कहानी है।

रामायण में उल्लेख के अनुसार भगवान राम ने प्रयाग में महर्षि भारद्वाज से पूछा था कि ऐसा कोई स्थल बताएं जहां मैं अपने वनवास का समय व्यतीत कर सकूं। महर्षि ने उन्हें चित्रकूट में रहने का आदेश दिया था। इस बात को रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास ने इस चौपाई के माध्यम से कहा है

''चित्रकूट गिरि करहु निवासू,
जहं तुम्हार हर भांति सुपासू।''

महर्षि वाल्मीकि ने भी उन्हें यही राय दी और मत्यगयेन्द्रनाथ की आराधना के बाद भगवान राम चित्रकूट के निवासी बन गए। दरअसल कामदगिरि की महिमा का वर्णन करना आलेख की परिधि से काफी आगे निकल जाना है। इसलिए इतना ही कह देना काफी है कि

''कामदगिरि भे राम प्रसादा,
अवलोकत अपहरत विषादा।''

अर्थात कामदगिरि स्वयं राम के प्रसाद बन गए और उनके दर्शन मात्र से ही विषाद तिरोहित हो जाते हैं।

इतना ही नहीं–

चित्रकूट चिंतामनि चारू।
समन सकल भव रुज परिवारू।।
चित्रकूट के विहग मृग, तृण अरु जाति सुजाति।
धन्य धन्य सब धन्य अस, कहहिं देव दिन राति।।

चित्रकूट के आवास की बारह साल की अवधि में भगवान राम ने ऐसे चरित्र दिए जो **''सो इमि रामकथा उरगारी, दनुज विमोहनि जन सुखकारी''** हैं।

भगवान राम से व्यथित भ्राता भरत का मिलन इसी चित्रकूट में होता है। यह चित्रकूट साक्षी है मानव के आचरण की उस पराकाष्ठा का जहां लोभ, मोह और किसी तरह की ईर्ष्या हृदय को प्रभावित ही नहीं करती। भरत अयोध्या के राजतिलक की तैयारी करके चित्रकूट आए थे और भगवान राम को सम्राट घोषित करने पर आमादा थे। किन्तु सत्ता यहां कंदुक बन गई। एक लात भरत का पड़ता तो राम की ओर दौड़ती और राम के प्रहार से भरत की ओर आती। अंतत: सिंहासन पर आसीन हुई चरणपादुकाएँ।

देवत्व के अभिमान को दंडित करने वाला इसी चित्रकूट का स्फटिक शिला क्षेत्र है। पौराणिक प्रसंग के अनुसार

एक बार चुनि कुसुम सुहाए।
निज कर भूषन राम बनाए'।।
'सीतहि पहिराए प्रभु नागर।
बैठे फटिक शिला परमादर।।

वास्तव में यह दृश्य सौंदर्य को आदर देने का था। परन्तु इंद्र का पुत्र जयंत अपने घमंड में आया और अनादर कर चला गया। भगवान राम को तो तब पता चला

चला रुधिर रघुनायक जाना।
निज कर सींक बान संधाना।।

आखिरकार यह सींक का बाण तब शांत हुआ जब उसने शरण में आए हुए जयंत की एक आंख का हरण कर लिया।

चित्रकूट में यदि ऋषि थे तो निशाचरों की संख्या भी कम न थी। विराध जैसे अनेक राक्षसों के वध के प्रसंग रामायण में है। चित्रकूट ही वह स्थल है जो भगवान राम की प्रतिज्ञा का केंद्र बना। जब सरभंग ऋषि ने उन्हीं के सामने स्वयं की काया अग्नि को समर्पित कर दी और वह आगे बढ़े तो आज के सिद्धा पहाड़ में उन्हें हड्डियों का ढेर दिखा। उन्होंने पूछा तो पता चला कि निशाचरों ने मानवों का खाकर यह ढेर लगाया है। उन्होंने यहीं संकल्प लिया–

निसिचर हीन करौं महिं, भुज उठाइ प्रन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आश्रम जाइ जाइ सुख दीन्ह।।

भगवान राम इसी चित्रकूट अंचल में सुतीक्ष्ण से मिलते हैं और अंत में अगस्त्य से। रामकथा के अनुसार अनेक अस्त्र–शस्त्र उन्हें अगस्त्य मुनि ने ही सौंपे थे। जिनमें वह बाण भी शामिल था जिससे रावण मारा गया। रामकथा के महान चिंतक रामकिंकर महाराज के अनुसार चित्रकूट में अकेले गंगा की धारा मंदाकिनी ही नहीं आई थी, अपितु राम के चरण प्रक्षालन के लिए गुप्त रूप से गोदावरी और सरयू जैसी नदियां भी किसी न किसी अंश में यहां अवतरित हुई थीं।

दुर्भाग्य कि सरयू का कोई अस्तित्व नहीं बचा। जिसे सरयू

कहा जाता है वह अब एक नाला है जिसका वर्णन रामचरितमानस में यूं है–

लखन दीख पय उतरि करारा।
चहुंच दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा।।

सरयू कहे जाने वाले अब इस धनुषाकार नाले का भूगोल विलोपित हो चुका है और उसके प्रवाह क्षेत्र में बन गए हैं अनेक भव्य भवन।

उस चित्रकूट का अब अता–पता तक नहीं है जहां प्रकृति अपने संपूर्ण श्रृंगार के साथ विराजती थी। न तो पेड़–पौधे बचे और न ही जंगल। उनकी जगह उग आए हैं कंक्रीट के बियावान वन। वैसे चित्रकूट ने बड़ी प्रगति की है। यहां अनेक शिक्षण संस्थान हैं, भव्य आश्रम हैं और श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करने के अनगिनत आयाम भी। अगर नहीं है तो भगवान राम का वह चित्रकूट जहां बाघ मृग और हाथी के एक साथ विचरण करने कथाएं पुराणों में हैं।

कहते हैं कि तुलसीदास से मिलने कभी यहां मीरा बाई का आगमन हुआ था, और गोस्वामी जी ने ही उन्हें रैदास के पास भेजा था। यहां रहीम का रमना उनके साहित्य में ही वर्णित है। रहीम देश के सम्राट अकबर के मामा और देश के कोषाधिपति थे। लेकिन अपने आपदाकाल में उन्हें सबसे प्रिय चित्रकूट ही लगा। तभी तो उन्होंने कहा–

चित्रकूट में बसि रहे रहिमन अवध नरेश,
जा पर विपदा परत है सो आवत यहि देश।

जनश्रुति के रूप में विख्यात है औरंगजेब जैसे शासक भी चित्रकूट आकर नतमस्तक हो गया था। परन्तु क्षोभ है कि जिस चित्रकूट को औरंगजेब जैसे सम्राट खंडित नहीं कर पाए उसे वर्तमान विकास के झंडाबरदारों ने तहस–नहस कर दिया।

हद तो यह है कि कामदगिरि का परिक्रमा क्षेत्र ही अतिक्रमण के दायरे में है, यह बात अलग है कि उसे कानूनी जामा पहनाकर नकारने की कोशिश की जा रही है। लगातार जंगल कट रहे हैं और बड़े–बड़े भवन तन रहे हैं। पर्वत श्रृंखलाओं में चलने वाली खदानों ने चित्रकूट का नक्शा ही बदल दिया है। न तो सरभंगा का संभार पर्वत बचा और न सिद्धा पहाड़। कामदगिरि के आसपास भी अनेक खदानें इस अंचल के स्वरूप को कुरूपता प्रदान कर चुकी हैं। अब तो 'सुरसिर धार नाऊं मंदाकिनि' के वजूद पर ही बन आई है। पर्यावरण वैज्ञानिकों के सर्वेक्षण के मुताबिक वह पूरी तरह प्रदूषित हो चुकी है। रामघाट के आगे तो गंगा की इस धारा का अस्तित्व गंदे नाले के अतिरिक्त कुछ रह ही नहीं जाता।

बघेली गीत एवं गज़ल

शिव पाल तिवारी :- जन्म 27 जुलाई 1977, ग्राम पोस्ट समान तहसील ब्योहारी, जिला शहडोल (म.प्र.) में 1999 से बघेली में निरंतर काव्य सृजन से निरंतर कवि सम्मेलनों, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में काव्यपाठ । एल.आर.एम.सी.सी. ब्योहारी द्वारा सम्मानित, भारतीय साहित्य सम्मेलन जिला इकाई शहडोल में साहित्य मंत्री एवं हिंदी साहित्य सम्मेलन जिला इकाई में सचिव, सम्प्रति शासकीय एम.एल.बी, कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्यरत ।

लेहा तू फटकार फलाने इआ दरकी अब।
होइ जइहा सरकार फलाने इआ दरकी अब।।

कखरी मूँदब कोदइउ काँड़ब नहीं बनइ पइ।
रंधिहा तूँ जेउनार फलाने इआ दरकी अब।।

सिकहर टूट बिलारी केहीं भागि जगी हइ।
दूध लेई गटकार फलाने इआ दरकी अब।।

खोएन-खोए बूसा होइगा पइरा सगला।
पलिहा तू गोरुआर फलाने इआ दरकी अब।।

घुसत जा अरसी कस भरी बखारी माहीं।
होइ जइहा सरतार फलाने इआ दरकी अब।।

हम जो कहब त कहिहा तू कि कहत लाग हँइ।
तोंहरिन जयजयकार फलाने इआ दरकी अब।।

अतना करे कि बिसरे न अब उआ दरकी कस।
नहिं फूटी रोज कपार फलाने इआ दरकी अब।।

केसर केहीं पबरित घाटी कासमीर मा।
भारत केहीं पामन माटी कासमीर मा।।

राजनीत के अखमदार गहिरी खाईं का।
लागइ को कइसन के पाटी कासमीर मा।।

केतनेउ लगे रहें तुतुआमइ आगी काहीं।
लागइ को फटकारी डाँटी कासमीर मा।।

पुरिखन के थाती अस मानइं केतनेउ अबहूँ।
लागइ को टोरी परिपाटी कासमीर मा।।

राजा अबइ मिला हइ छाती छप्पन बाला।
उधमिन के धुंकना का छाँटी कासमीर मा।।

उहइ आइ सरदार लउह के पूर पुरुस उआ।
भारत-माता चूमी-चाटी कासमीर मा।।

हमरउ छाती गइ जुड़ाइ नगमाचइ काहीं।
लागी ना एक्कउ अब सांटी कासमीर मा।।

बघेली गीत

मन के पीरा आगे कइके लागइ हमहूँ गीत लिखी।
हारे थके बइठ मनइन के बखत परे मा जीत लिखी।।

कइसन कही लिखी धंउ कइसन मन के बाति मनइ मा हइ,
केतनउ जतन करी कइसउ पइ मन के बाति मनइ मा हइ।
पेटे से नटई भर आबइ मन के बाति मनइ मा हइ,
सांसत मा अइसन परान हइ मन के बाति मनइ मा हइ।।
अहुर-बहुर जिउ होइ कि उनहीं हमहूँ मीत लिखी।
मन के पीरा आगे कइके लागइ हमहूँ गीत लिखी।।

केतनेउ कहंइ लिखा अबकी तुम मन के सगल मलाल लिखा,
बेउंति कतर जिउ ओन्हा कइके छिपिअन केर कमाल लिखा।
भितरे बहुत मुहें मा कुछ-कुछ मन काहीं कंगाल लिखा,
अइसन लिखा लिखंइ बइठा ता जिउ केहीं जंजाल लिखा।।
भितरे कहल भले केतनउ पइ उनके खातिर सीत लिखी।
मन के पीरा आगे कइके लागइ हमहूँ गीत लिखी।।

जेसे कहब बिथा भितरे के उहइ कही कइसन बतात हइ,
जो ना कहब बाति जिउ के ता जिउलागी केतना पिरात हइ।
कोऊ कहइ कही इआ कइसन जानित हइ जेतना लजात हइ,
खुसुर-फुसुर करबइ जो कबहूँ उहउ बइठ ओखा सुनात हइ।।
तबहिन ता अइसन लागइ कि दुइ आखर के प्रीत लिखी।
मन के पीरा आगे कइके लागइ हमहूँ गीत लिखी।।

लगी टेंव - बघेली कहानी

शिव पाल तिवारी :- जन्म 27 जुलाई 1977, ग्राम पोस्ट समान तहसील ब्योहारी, जिला शहडोल (म.प्र.) में 1999 से बघेली में निरंतर काव्य सृजन से निरंतर कवि सम्मेलनों, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में काव्यपाठ । एल.आर.एम.सी.सी. ब्योहारी द्वारा सम्मानित, भारतीय साहित्य सम्मेलन जिला इकाई शहडोल में साहित्य मंत्री एवं हिंदी साहित्य सम्मेलन जिला इकाई में सचिव, सम्प्रति शासकीय एम.एल.बी, कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्यरत ।

सरजू अपने गामय भर के नहीं बलुक एनठे पसगंइअत भरे के नामाजादिक बेउहर अउ जोलाहल अदलतिहा मनई रहें। एखा अइसव समझि सकित हय कि **''तीन क तेरा अउ कोमर क चरेर कइ देब''** इनके बांउ हांथ के खेल रहा। इनके एइन गुनन के कारन बहुतक मनई इनसे छरकबउ करंय। बहुतय गाढ़ परे म माने जब कहंव अन्तय न देखाय तब इनके लघे संघरंय, अउ ओखा सरजू फेर सींग डोलत भर लगामंय। इआ कही कि जे कउनउ बिपत म इनके लघे एक बेर आयगा त उआ फेर मान लीन जाय कि जिनगी भर क सरजू के गहन आय होइगा। ओखर मुक्तरब **''इआ देंही चीकन''** नहीं देखाय सकय।

इलाका के इलाकेदार साहब के सरजू म बहुतय किरपा बरसय। ओखर कुछ कारन इहव रहय कि गढ़ी के जउन अबड़ - दबड़ के काम होंय ओही सरजुन निपटामंय। अइसनव नहीं होबा करय कि जे खर मिजाज के मनई होत हंय उंय पूर-पूर खरय होबा करत हंय। उनहूं म कहंव न कहंव, कउनव न कउनव अइसन कोनमा-कोतरा जरूरय होबा करत हंय कि जहाँ उनकर सगला नेम धरा के धरय रहि जाबा करत हय। बस्स इहय मेर के सरजुअव के साथ रहा। अलानिआ त नहीं पय दबी डाढ़ म बहुतेरेन के खुसुर-फुसुर सुनबे म आबय कि सरजू म अउर हय जउन हय, पय हय नजर के बहुतय कच्चा मनई।

अबहिनव गामन के मेहेरिअन म य त हइअय हय कि जब भर कउनउ बहुतय बड़ी बात न होय त ओही अपनेन भीतर दबाए रहि जाती हंय। हाँ य जरूर हय कि जब दुइ बिथा एक मेर के होंय त भेंट भए म कहंव न कहंव परगट होइन जातीं हंय। अउ फेर इहय दुइ से चार, अउ चार से सगले गाँव म फइलि जाति ही। सरजू केर गाँव के जो चबडिढ़ गंजरिहाइन से साबिका न परा होत त उंय अबहूं पाक साफय कहउतें। एक रोज धुंधुरके गंजरिहाइन भउजी के भेंट तलबा के अगोले म सरजू से होइ गय। अकेल पाय के सरजू गंजरिहाइन क कुछ अइसन कहिन कि गंजरिहाइन आउ दिखिस न ताउ, अउ गोहार मारि के सरजू क मार लहपड़िआय दिहिस। सरजू क जब गाँव के मनई तमाम लोटरे-पोटरे दिखिन त पूंछिन कि, न बेउहर य कइसन लोटरे अस हया। त सरजू पहिले त सकुचाने अस, फे कहिन कि अब का बताई जइसय तलबा के अगोले म पंहुंचेन त कुछ तजबिज अस परा त छटि अस परेन। जाना ओखर का नाव ? अरे उहय हो ? ओखर नाबय नहीं आबय ! अरे उहय गंजरिहाइन ! रहय त उठाइस नहीं ससु चकल्लस म परि गयन ते। होइगा हरबिन ओनठे से सरजू त अपने घरे कई भितरिआय गें, पय गंजरिहाइन त गंजरिहाइनय आय उआ समोखय बालेन म से न होय। रातय झंडा गाड़ि दिहिस, कहिस आज सरजुन नहीं कि हमिन नहीं। एक घरी म सरजू के दुअरय म आइगय, कहिस आज हरामी सरजुआ पाइस त हइअय पय थोरू कमी अस रहिगय। दहिजार निकरि आबय त हम आपन जिउ त जुड़बाय लेई।

दबी डाढ़ म भले केतनेउ कहंय पय य पहिल बेर आय कि कोऊ सरजू क अलानिआ कहंय के हिम्मत किहिस होय। कुछ जून भर गंजरिहाइन आपन बाली किहिस फेर उहउ घरे कई बहुरि गय। गंजरिहाइन के हल्ला सुनि के सरजू पछीत कई से चुपारेन गढ़ी कई चले गें। गाँव के सेआन परमेश्वरदीन काका कहिन कि देखा भाई हम य न होय कहित हैन कि सरजू निकहा आय किहिस ही, पय मेहेरिअन केर य मेर के उपरचढ़ी करब निकहा त न होय। मेहेरिअन क अपने चाल आचरन म रहत के आय न। अउ फेर बुढ़ीबा के **''मरबे के सोंच न होय ही सोंचत दऊ के लहटबे के आय ही।** आज गंजरिहाइन य मेर करत ही काल्ह दस झन अउर तेआर होइहंय। गंजरिहाइन के परोसी भोला बिहान भए बड़े भिनसरहय

गंजरिहाइन के घरे जाय के कहिस कि भउजी तंय अबय सरजू क नहीं जनते। सार बड़ा कनुनिहा अउ जाबद्ध मनई हय, कहंउ सार अरझाबय न। गंजरिहाइन कहिन हमहीं ओखे अरझामंय के फिकिर नहीं आय रे, फिकिर त तोंहरे पांचन के डेर के ही। तोंहरेन पांचन कस मंसेरु गांव म बने रहिहंय त सरजू हरे इहय मेर करत रहिहंय। भोला कहिस हम काल्हि के परमेस्सरदीन बाबा के बतकहाव सुनि के आय कहेन, बाकी तंय जान भउजी। गंजरिहाइन कहिस परमेस्सरदीन बाबा हरे सठिआय गे हें। उनकर अकिलि काम नहीं करय। भोला कहिस हां उआ त हय पय लागत हय सरजुआ पंचाइत लागाई। अउ तंय त जनतेन हए भउजी कि पंचइतिहा सब बतइहंय ओहिन कई। गंजरिहाइन कहिस तंय हमहीं बतउते आय हए, कि धमकी आय देते हए। भोला कहिस भउजी हम भला धमकी काहे क देब हम त तोही आपन मानि के बताइत आय हैन, बांकी तोर मरजी।

सांझि के उहय भ, जेखा भोला सुगात रहा, पंचाइत लाग अउ पंचाइत म सरजू दंहकि के कहिस कि भाई हम त तलबा के अगोले म छटि के गिरि गएन। जना ओनठे गंजरिहाइन रहय त देखा हम हांथ न काटब, उहय हमहीं उठाइस नहीं हमरे त उठय के हिम्मतिन नहीं रही। पय घरे आयके नहीं जानी कि काखे सरझाए म अंट - संट बताय लाग। गंजरिहाइन कहिस हइअय कि देव धरम क डेरव रे सरजुआ! सरेआम गंगा न पी। पय आखिर गंजरिहाइन के नहीं चला, त नहीं चला। बारा ठे सबूत अउ गबाह दइ के सरजू पाक साफ कहाय गें। गंजरिहाइन हारत के त न होय पय हारि गय। दुलारे काका जे सरजू से बहुत दिनन से खार खाए बइठ रहें दबी डाढ़ म कहिन हइअय, कि पंचइतय भर अंतिम न होय। थानव पुलिस के दुआर खुले रहबा करत हंय। पय गंजरिहाइन कहिस, कि नहीं हमार थाना पुलिस म कउनउ बिसुआस नहीं आय। हम कहंउ न जाब।

कहत न हंय, कि जउन मेर से डेर देखासिखी होबा करत ही उहय मेर से साहसव देखासिखी आइन जात हय। गंजरिहाइन अउर किहिस जउन किहिस, पय गाँव के मनइन म साहस त भरिन दिहिस। अब आए दिन कहंव न कहंव से सरजू के चाल आचरन के किस्सा सुनबे म आइन जाय। पहिले जउन बतकहाव घरे के भितरेन रहि जाबा करंय, अब गली खोर म आय गें। एक रोज त ठेमनिआइन कहिस कि य सरजुआ के नास होय, गंजरिहाइन कउनव बेजा न होय कहत ही। य परु साल हमरव अकेल पाय के हाथ पकरि लिहिस ते, हमार दउरत-दउरत केबा होइ गय। कइसव मइसव भागि पाएन ते, जब दूरी भर होइ गएन त दहिजार कहय **''न तोरे मनुस न हमरे जोय, अस मन लागय बेटबय होय''** मोले के दीदिउ कहिस कि अरे दादू य सरजुआ गंउहाइन के खातिर मारे धरम के न होय घर बनबाय दिहिस ही। हमहीं त ओहूं म कुछ कलमिस लागत हय। दहिजरा उंहय गोंजरा रहत हय।

एक रोज गंजरिहाइन मइके से रेंगतय घरे आबत रही। गांव आबत-आबत धुंधरुक होइगा। जइसय बढ़ई के घर ठे पहुंची तबहिनय सरजू अइसय ताकय अस म रहय त धीरे से कहिस गंजरिहाइन! गंजरिहाइन ठढुकि अस गय। अउ अनकय लाग कि को होई, तबहिन सरजू कहिस हम आहेन गंजरिहाइन। गंजरिहाइन के भरभंड म त गुसा चढ़ि गय, पय बहुत सम्हार अस के कहिस हाँ! बोल का आय। सरजू कहिस देख गंजरिहाइन। हम पुरान सब बिसराय दिहन हय। अउ हम तोही अबहूँ बहुत.....। अब त गंजिहाइन के नथुना फूलंय-पचकंय लागें। पय बहुत सम्हार के कहिस तंय बिसराय दिहे होइहे पय हम नहीं बिसराए आहेन। हमहीं त उआ सुधि कइ के देंह म आगी लगि जात ही। अब तंय एंन ठे से चलेन जाए नहीं अनरथ होइ जई। तबहिन का जानी कि कहाँ ठे रहा पय एकदरकिन भोला परगट अस होइगा। अउ जउने भोला हिनखे सरजू आगे बक्र नहीं फूटत रहें, आज कहिस मार! मार सारे क! गंजरिहाइन कहिस एही मरे क का मारी रे!

उआ मिती से सरजू गलकाप अस होइगें। कोऊ कहय सब सोन चांदी लइके सरजू बम्बई भगिगा। कोऊ कहय हम बनारस म दिखेन हय साधू होइ गा हय। पय एतना जरूर भ कि अब उआ गाँव म कुन्निआउ अउ अन्निआउ के खिलाफ बोलइआ बहुत होइगें। दबिन डाढ़ म पय अब परमेस्सरदीन काकव हरे कहंय लागें कि **''जय होय हो गंजरिहाइन के।''**

स्वैक्षिक क्वारंटीन में असली मास्साहब..... कोई सम्मानित न कर दे.....

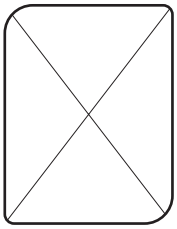

वरूणेन्द्र प्रताप सिंह :- सुहृदों बन्धु वान्धवों में वरुण नाम से जाने जाते है। इनकी प्रतिभा बहुआयामी है। रसायन शास्त्र में स्नातकोत्तर में विश्व विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करने के साथ इन्होंने शिक्षा शास्त्र (एम.एड.) में भी स्वर्ण पदक प्राप्त किया। साहित्य संस्कृति एवं कला में रुचि के चलते हिन्दी साहित्य में भी एम.ए. किया। सम्पूर्ण विन्ध्य अंचल रसायन विज्ञान के निष्णात शिक्षक के रूप में प्रतिष्ठित वरुण की साहित्य एवं संस्कृति के अध्ययन व तत्संवधी लेखन में भी गहन रुचि है। रीवा के साहित्यिक संस्कृतिक आयोजन में उनकी सूत्रधार की भूमिका रहती। पत्र- पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर उनके लेख प्रकाशित होते रहते है। व्यंग लेखन के क्षेत्र में भी उनके प्रयास समादृत है। सम्प्रति स्कूल शिक्षा विभाग में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय राम नई में पदस्थ ।

शिक्षक दिवस नजदीक है... गांव, मुहल्लों, समाजसेवियों और विभिन्न संस्थाओं को सम्मानित किए जाने के लिए एक मास्साहब की खोज प्रारम्भ है। सभी को एक आदर्श... ?? मास्टर पांच सितम्बर के लिए चाहिए। कार्यालयों में पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन की पगड़ी वाली फोटो ढूढ़ कर झाड़ पोंछ जारी है। उनके निजी जीवन के सांस्कारिक मूल्यों को कबका दफन कर चुके लोग, फोटो की जरूरत इस विशेष दिवस को बड़ी शिद्दत से महसूस करते हैं। चौबीस घंटे में अढ़तालीस घंटे के बराबर का तिकड़म करने वालों को अचानक शिक्षा का महत्व याद आ गया है। भाषण और मंच संचालन के लिए शिक्षा से जुड़ी बड़ी से बड़ी बात ढूढ़ी जा रही है। साउंड सिस्टम वाले, माला वाले, शाल विक्रेता सभी सक्रिय हैं। यह सब देख कर मैंने एक मित्र से गदगद होकर पूछा... एक शिक्षक का इतना सम्मान... ? उसने कहा बकलोल हो स्साले.... ये हाई-फाई तैयारी शिक्षक के लिए नहीं.... जो मुख्य अतिथि आएंगे उनके हिसाब से है।

मुहल्ले के एक भैय्याजी में अपने नेतृत्व क्षमता को लेकर भीषण आत्मविश्वास विगत 5-6 वर्षों से जागृत हो चुका है। बहुत से चमचें भी तैयार हो चुके हैं...। वे प्राय: शाम की दरबार में मास्टरों को जी भर के गरियाते हैं...। उनकी ठीक-ठाक सैलरी पर भी भैय्याजी को आपत्ति है। हर समस्या को मास्टरों से ही जोड़ते हैं पर आज उन्होंने भी एक चमचे को माइक, फूल, माला आदि की बढ़िया व्यवस्था के साथ एक मास्साहब को ढूढ़ लाने का हुक्म दिया। एक चमचे ने प्रश्न कर दिया... भैय्या आज यह क्या... ? भैय्या ने समझाया... देखो मास्साहब के अलावा यह माला कौन पहनेगा... हमी लोग न... ? भाषण कौन देगा... हमी लोग न... ? और अखबारों के माध्यम से जो मैसेज जाएगा उससे लोगों को लगेगा न कि शिक्षा और शिक्षकों का हमारे मन में कितना सम्मान है...।

शैक्षणिक संस्थाओं में आनलाइन शुल्क जमा किए जाने की व्यवस्था लागू होने से पहले यह कार्य एकाउंटेंट द्वारा किया जाता था। रजिस्टर पर बाकायदा हर छात्र का हिसाब होता था। एकाउंटेंट महोदय ने हर नाम के पहले पेंसिल से एक अक्षर का कोड वर्ड दर्ज किया हुआ था। चपरासी द्वारा पूछे जाने पर बताया कि यह छात्र के पिता का व्यवसाय है.... जैसे पुलिस के लिए 'पी', वन विभाग के लिए' एफ'.... रेवेन्यू के लिए 'आर' आदि...। इससे पता चलता है कि छात्र हमारे कितने काम का है। एक नाम के बगल में 'यू' लिखा देखकर वह पूछ बैठा... यह क्या है... ?? महोदय ने उत्तर दिया 'यू' फॉर यूजलेस यानि मास्टर। ये हमी से सिफारिश करवाएगा... मिलने पर दुनिया भर की नैतिक शिक्षा देकर दिमाग खराब करेगा सो अलग...। बहरहाल, एकाउंटेंट महोदय रिटायर होकर एक एनजीओ के संचालक हैं। उन्हें अपनी सामाजिक गतिविधियों को उल्लेखनीय बताने के लिए अभिलेख तैयार करने हैं। स्वयं द्वारा आयोजित शिक्षक सम्मान समारोह के लिए घर से माइक, फूलमाला वाले से बात करने के साथ डॉ. राधाकृष्णन की फोटो लेने निकले हैं... रास्ते में मास्साहब का चयन भी मन में घूम रहा है... साथ ही यूजलेस का यूजफुल होना भी...।

नगर की समीपी ग्राम पंचायत को युवा नेतृत्व प्राप्त हुआ है। एक साल के अंदर ही मुखिया का मेटामारफोसिस हो चुका है। नयी टाटा सफारी... धवल वस्त्र... गले के पास की खुली प्रथम दो बटनों के बीच से झांकती सोने की मोटी चैन... एक खास बॉडी लैंग्वेज.... सब कुछ भव्य और दिव्य। उनकी निहायत निजी बैठक में एक खास ने सुझाव दिया कि पांच सितंबर नजदीक है... इसके

पहले कि लोग कहना शुरू करें कि आप को केवल अपनी चिंता है... शिक्षक सम्मान के माध्यम से मेसेज दीजिए कि आप भावी पीढ़ी के असली हितैषी हैं। सरपंच साहब ने प्रश्न किया... लेकिन शिक्षा पर मैं बोलूंगा क्या ? उनके दूसरे साथी ने जबरदस्त सुझाव दिया... सम्मानित होने वाले मास्साहब की असलियत एक किनारे रख आप दो मिनट तक समय से आने नियमित कक्षा लेने आदि की तारीफ कुछ इस तरह सोच कर करिए, जैसी प्रसंशा आप अपने लिए लोगों से सुनना चाहते हैं। अगला दो मिनट शिक्षा नीति पर यह कह कर बिताइए कि मैंने सब पढ़ा है आप लोग भी पढ़ें और देखें कि सरकार आप लोगों को लेकर कितना चिंतित है... कितने अच्छे प्रावधान हैं... अच्छे स्कूल... हर वर्ग के लिए शिक्षा। इसमें शामिल हो, बच्चों को स्कूल भेजें... आदि। अगला दो मिनट राधाकृष्णन जी पर यह कहते हुए प्रारम्भ करें कि मैंने खूब पढ़ा है... आप लोग भी पढ़िए... उनके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा लीजिए...। वे महान थे, शिक्षाशास्त्री थे। देश की चिंता करते थे। इसमें पढ़ने जानने की जरूरत कहां है ? इसके बाद वहां उपस्थित सभी लोगों की प्रसंशा कीजिए। अपने विरोधियों की प्रसंशा अधिक कीजिए... क्या पता अगली सरपंची में पलट कर आप की ओर आ जाए। सम्मान हेतु मास्साहब का चयन भी विरोधी लोगों के परिवार से करिए। शिक्षक दिवस एक अवसर है आपके लिए... समझिए...। इस प्रकार आपके भाषण से श्रोताओं को जो मिलेगा वह वास्तव में 'गोट हेयर' भी नहीं होगा पर तारीफ घर-घर होगी। कुलमिलाकर आयोजन होकर रहेगा।

ऐसे सम्मान समारोह की तैयारी की चर्चा सुन बहुत से मास्साहब दुबक गए हैं। पिछले साल एक मास्साहब का नाम सरकार द्वारा सम्मानित किए जाने हेतु प्रस्तावित किया गया। अखबार में नाम आते ही शोध दल सक्रिय हो गया। उनकी तमाम रामकहानी हफ्तों मीडिया में छाई रही। इसके साथ शिक्षा विभाग के अधिकारी सब काम छोड़ जांच करते रहे। कुलमिलाकर पुरस्कार का दावा करने वाले भाग चुके हैं और आपत्ति करने वाले उनके नाम ढूढ़ते फिर रहे हैं। मास्साहब बनने वालों में एक वर्ग ऐसा भी है जो घर में तीन पीढ़ियों से नैतिक शिक्षा के महत्व और शिक्षक से सादे सरल जीवन की चर्चा बड़े बुजुर्गों से सुनता आया है। उसके मन में पौराणिक काल से लेकर स्वयं के आदर्श शिक्षकों तक की गहरी छाप है। अच्छे संस्कारों के चलते एक कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक बनना उसने स्वयं स्वीकार किया है। इसी के साथ साल के शेष तीन सौ चौंसठ दिन जो सम्मान उसे मिलता है, उसको लेकर व्यथित भी है। उसे मालूम है कि सम्मानित करने वाले लोग वर्ष भर उसे कैसा सम्मान देंगे, घर-परिवार, रिश्तेदार और समाज में शिक्षक को दोयम दर्जे का मानने वाले लोग कहीं उसे सम्मानित न कर डालें। इस क्षणिक सम्मान से भयाक्रांत होकर वह छुप गया है...कोई उसे सम्मानित न कर डाले।

सम्मान से भागते पराते कई मास्साहबों ने अज्ञातवास हेतु स्वयं को क्वारंटीन कर लिया है। इसमें एक वर्ग वह है जो डरा हुआ है कि उसकी पोल न खुल जाए। सम्मानित होने के बाद, उसकी नियुक्ति, पदोन्नति आदि की कोई कहानी वायरल न हो जाए... सो फटी में है। दुबका हुआ दूसरा वर्ग है सांस्कारिक और कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकों का। ऐसे शिक्षक को लग रहा है कि जो सम्मान वर्ष भर नहीं मिलता उसे क्षणिक रूप से प्राप्त करने वह क्यों जाए। हालांकि उसे यह भी पता है कि शिक्षक होने मात्र से वह सम्मान का हकदार नहीं हो जाता। इसके लिए तपना पड़ता है। कृष्ण, चाणक्य, विवेकानंद या एपीजे बनने के लिए सच्चा योगी बनना पड़ता है। इस एकांतवास से वापस आकर, वह इसी इच्छाशक्ति से कार्य करना और करते रहना चाहता है... बगैर किसी सम्मान की ख्वाहिश के।

वरूणेन्द्र प्रताप सिंह
संपर्क- 9425847067

पछिआय के आय गयेऽ

सजीमन औ सनेही के बड़ी मित्राइस रही। रुपिया-पडसा के जुड़कर के दनो जन बम्बई नोकरी करै में। उहाँ हसन रुके रहे. पै उनके मन के नोकरी नहीं मिली। जेबी कुछ हलुकाय लागि त दनौ जन आपस में चर किहिन के आजु साँझि के निकहा होटल म खाना खावा जाय। काल्हि विह घरे चलै क है।

साँझि के दुनौ जन एक ठे बड़े होटल म खाना खाय गें। सामने मौन रक्खा रहै। मीनू म एक जग्धे कोडोराइस लिखा रहै। उहौ आडर के दिहिन। सोचिन- आजु कोडोराइस के सुआद लीन जाय।

कुछ देर बाद टेबुल पर खाना लगि ग। कोडोराइस बंद पैकेट मिला, जउने हरबिन ठंड न होइ जाय। रोटी-सब्जी खाये के बाद कोडोराइस के पैकेट खोलिन, त देखिन पैकेट म कोदई के भात घरा रहै। सजीमन कपारे म हाँथ दै मारिन औ दुनौ हाँथ जोरि के कहिन- हे कोडोराइस महराज ! तोहई त हम घरेन म छाँड़ि के आयेन तै। तँ इहौं पछिआय के आय गयेऽ।

बघेलखण्ड के प्रमुख स्थानों के नामकरण का इतिहास

डॉ. देवेन्द्र सिंह 'हीरा':- जन्म स्थान- ग्राम-टटिहरा, जिला-रीवा, शैक्षणिक योग्यता एम.ए. हिन्दी एवं इतिहास, एल.एल.बी.। बघेली विशिष्ट शब्दों पर लघुशोध, बघेलखण्ड के स्थानों के नामों पर हिन्दी विषय में पी.एच.डी.। शोध प्रबंध प्रकाशित। बघेलखण्ड के वीर काव्य अजीत फतह रायसा का भाषानुवाद, मूल लेखक प्रो. अख्तर हुसैन निजामी, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल से प्रकाशित। समय-समय पर स्वतंत्र लेखन जो पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित- आकाशवाणी से बघेली लोक साहित्य एवं इतिहास विषय पर वार्तायें प्रसारित। सम्प्रति अधिवक्ता रीवा जिला न्यायालय।

नामों का कारण परक अध्ययन मनोरंजक होने के साथ-साथ क्षेत्र विशेष के उस इतिहास को उजागर करता है जो अतीत के गर्त में छिपा है। विभिन्न स्थानीय नामों के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक ऐतिहासिक आदि अनेकानेक कारण होते हैं। लोगों का यह कहना कि नाम में धरा क्या है वो नही जानते कि नाम ही रूप का प्रकाशक है, नाम रूप मिलकर शिवतत्व बना है। किसी चीज का नाम यों ही नही रख जाता, उसके पीछे व्यष्टि और समष्टि की चेतना, जातीय चेतना काम करती है। अधिकांश स्थान नाम सार्थक हैं और हमारी लोक संस्कति की विविध स्थितियां अपने में संजोये हुये है। स्थान नामों का भाषावैज्ञानिक महत्व तो है ही उनके नामो से विविध रस भी ध्वनित होते हैं। बघेलखण्ड के संदर्भ में देखा जाय तो वीर रस से ओत प्रोत यहॉ कई नाम हैं नष्टिगवां, नैकहाई, झगरहा जौंहरा इसी प्रकार से सेजहटा, फूल, माला, सोनवर्षा, कंचनपुर ग्राम नाम लालित्य व रस से सरावोर है। यहाँ प्रस्तुत है बघेल खण्ड के कतिपय स्थानों के नामकरण का इतिहास/मीमांसा।

बांधवगढ़- बांधवगढ़ शहडोल वर्तमान में उमरिया जिले का पर्वतीय दुर्ग है। बघेल नरेश राजा रामचन्द्र बघेला जो अकबर के समकालीन थे गहोरा छोड़कर (रीवा से पूर्व) बांधवगढ़ को अपनी राजधानी बनाई जो करीब पचास वर्षों तक कायम रही इसी वंश के राजा विक्रमादित्य ने मुगलों के बांधव पर पड़ते दबाव के कारण रीवा राजधानी बनाई वह रीवा बघेलखण्ड के रूप में अभी तक आवाद है। रीवा राजगद्दी को बांधवगद्दी तथा यहॉ के नरेशों को बांधवपति (बॉन्धवेश) अभी तक कहा जाता है। फारसी इतिहास में बांधवगढ़ का नाम वन्धुदेश मिलता है यह देश सल्तनत काल में हांथियों के लिये मशहूर था।1

एक पौरोणिक किवदंन्ती बघेलखण्ड में प्रचलित है कि भगवान श्री राम ने अपने राज्याभिषेक के आनंदोत्सव में अपने वन्धु, वांधवों को जागीरें बांटी और इस वनस्थली को जहां आज बांधवगढ़ स्थित है अपने वन्धु लक्ष्मण को उपहार स्वरूप प्रदान की। चूंकि यह जागीर रामजी ने अपने वन्धु को प्रदान की इसलिये इसको वन्धु देश कहा गया वन्धु-बांधव का शब्द युग्म होने से इस मुल्क को कालान्तर में बांधव देश या बांधव राज्य कहा जाने लगा। इस स्थान नाम की सार्थकता पर यदि विचार किया जाय तो वांधवगढ़ में बन्धु लक्ष्मण की पूजा अर्चना सदा से होती आई है, रीवा राजधानी बनने पर भी रीवा राज्य की तरफ से बांधवगढ़ में लक्ष्मण जी की पूजा अर्चना का विधान होता रहा। रीवा नरेश महाराज विश्वनाथ सिंह ने रीवा में भी लक्ष्मण जी की उपासना की शुरूआत की लक्ष्मण जी का एक मंदिर निर्मित कराया और विशाल वाग लगवाया कुछ और मंदिर इस बाग में उत्तरवर्ती नरेशों ने निर्मित कराये। इस पूरे परिसर को लक्ष्मण बाग कहा गया जिसे रीवा नरेशों का गुरूद्वारा होने का गौरव प्राप्त है।2

गोविन्दगढ़- रीवा जिले का यह नगर रीवा से 20 किलोमीटर दक्षिण की दूरी पर स्थित है। महाराज रघुराज सिंह की एक रानी रनावट झीलों के शहर उदयपुर की थीं, रीवा आकर महारानी ने झील के किनारे महल बनवाने की इच्छा जाहिर की फलस्वरूप राजा ने गोविन्दगढ़ में पहाढ़ की तराई में एक प्राकृतिक झील को विस्तार देकर विशाल सरोवर का रूप दिया। अपनी प्रेयसी की कामना पूर्ण करते हुये राजा ने तालाब ही में नीव डालकर एक विशाल किला भी बनवाया, किले प्रांगण में भगवान गोविन्दजी का एक मंदिर बनवाकर भगवान की संगमरमर की मूर्ति प्रतिष्ठित की। गोविन्दजी के नाम पर इस नगर का नाम भी गोविन्दगढ़ रखा गया इसके पहले यह स्थान खन्धो क्षेत्र के अंतर्गत था।

माधवगढ़- सतना जिले का यह प्रमुख स्थान है, राजशाही जमाने में यह एक इलाका था। रीवा राज्य की 29 पीढ़ी में महाराज जय सिंह जी थे इन्होंने अपने मझले पुत्र राव इन्द्र लक्ष्मण सिंह को यह इलाका जो पथरहट नाम से था, प्रदान किया इस प्रदत्त चैरासी में कभी चैरासी ग्राम शामिल थे। महाराज जयसिंह ने पथरहट का नाम बदलकर इसको वैष्णव नाम देते हुये माधवगढ़ किया इतना ही नहीं राजा ने इसका पुराना नाम लेने पर पावंदी लगाते हुये एक इश्तहार जारी किया कि जो व्यक्ति इसका पुराना नाम पथरहट लेगा उसको एक शेर नमक खिलाया जायेगा। **3**

लक्ष्मण सिंह ने पुरानी गढ़ी से मिलाकर नवीन गढ़ी में मकानात तामीर कराये जो वर्तमान में टमस के दाहिने किनारे पर सतना सड़क के बाँये स्थित है।

कृपालपुर- रीवा नरेश महाराज व्यंकट रमण सिंह का जन्म इसी गांव में हुआ था। इसका पुराना नाम कछियाटोला था, जैसा कि महाराज रघुराज सिंह जी ने अपने ग्रंथ भक्तमाला में इस घटना का उल्लेख किया है कि यहां के इलाकेदार ठाकुर को संतानसुख प्राप्त नही हो रहा था इसी बीच प्रसिद्ध संत उर्मिलादास जी गांव में पधारे संत के आशीर्वाद से ठाकुर साहब को संतान की प्राप्ति हुई, संत कृपा फलित होने के कारण इस गांव का नाम कृपालपुर रखा गया। कृपालपुर में संत उर्मिला दास का आश्रम है जहाँ इनकी खडाउँ रखी हुई है। अमरशहीद पद्यधर सिंह की जन्मभूमि होने का गौरव भी इस धरा को प्राप्त है।

नागौद- यह सतना जिले का प्रमुख नगर है यहाँ कभी नागवंशियों की सत्ता थी। इतिहासविद् ऐसा मानते हैं कि नागो को मारकर परिहारों ने यह राज्य प्राप्त किया। नागों के वध के कारण इस स्थान का नाम नागावध फिर नागौद हुआ डॉ. फ्लीट भी इस मत को स्वीकार करते हैं मगर महाराज जयनाथ के कारी तलाई ताम्रपत्र में इसका नाम नागदेय मिलता है जिसका अर्थ होगा नागों के हेतु देय, सम्राट चन्द्रगुप्त की द्वितीय पत्नी नागपंथी थी अस्तु नागों का वध करने के स्थान पर उनको पुरूष्कार स्वरूप देय बात अधिक पुष्टिप्रद मालुम होती है। **4**

आल्हाघाट- रीवा जिले का ऐतिहासिक स्थान है प्रो. मिराशी ने नरसिंह के आल्हाघाट अभिलेख वर्ष 1216 में वर्णित षडषडिका घाट से इसका तादात्मय स्थापित किया है यह रीवा की सिरमौर तहसील से लगभग 6 कि.मी. दक्षिण पश्चिम में स्थित है, यहॉ देवी देवताओं की कुछ मूर्तियाँ चट्टानों पर उत्क्रीर्ण हैं।

एक आख्यान के अनुसार चन्दवरदाई कृत पृथ्वीराजरासो में बनाफर जाति के जिस राजपूत सामंत का उल्लेख है उसी के नाम पर इस घाट का नाम आल्हाघाट रखा गया है। आसपास के शिलाखण्डों पर बहुत से चिन्ह आल्हा के समय के कहे जाते है जैसे अमुक चिन्ह आल्हा के भाले का, अमुक गुफा उसके कोठा और भंडार की है। **5**

सिहावल- सीधी जिले का यह एक ऐतिहासिक स्थान है। पाणिनी ने शिखावल को संज्ञा माना है, यह कभी एक समृद्ध नगर था जिसका प्राचीन नाम शिखावलं था। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने इसकी सोननदी केतट पर स्थित सिहावल ग्राम से एकरूपता प्रकट की है। **6**

शिखा = पर्वत चोंटी, अवलि = कतार = शिखावलि - शिखावलं - सिहावल।

टीकट- सीधी जिले के इस ग्राम के नामकरप के संबंध में विद्वानों का विचार है कि आर्येत्तर जनजातियों में एकजाति कीकट रही है संभव है कि कीकट जाति उन दिनों कुरूक्षेत्र के वासी रहे हों जैसा कि क्षेमेन्द्र चन्द्र चट्टोपाध्याय मानते हैं और बाद में आर्यो का विस्तार होते जाने के कारण कैमूर की उत्तरी ढलान पर उन्होने शरण ली हो। अनुमान है यह क्षेत्र इस जाति का वोधक हुआ जो स्थानीय वोली के प्रभाव और कीकट के वर्ण विपर्यय के कारण टीकट कहलाया। **7**

रामपुर- सीधी जिले के इस स्थान नाम के संबंध में बघेलखण्ड के प्रख्यात संस्कृत कवि रूपणि शर्मा ने अपने काव्य ''बघेलवंश वर्णनम्'' में बघेल राजा रामचन्द्रदेव की राजधानी रामनगर बतलाया है जबकि इसी पुस्तक की अंग्रेजी भूमिका में प्रो. ए.एच. निजामी ने रामनगर को रामपुर माना है जो बांधवगढ़ शहडोल से पांचमील पूर्व स्थित है। स्पष्ट है कि इस नगर का नाम बघेल शासक राजा रामचन्द्रदेव (1555-92) के नाम पर है। **8**

विराट नगर- शहडोल जिले का सोहागपुर कस्वा महाभारतकालीन मध्यविराटनगर की राजधानी थी। मध्य विराट

का राजा वसंत था जिसने महाभारत युद्ध में पाण्डवो को सहयोग भी दिया था, यहीं पांडवो ने अपने अज्ञातवास का तेरहवां वर्ष विताया था। इस स्थान पर आज भी विराटेश्वर का मंदिर विद्यमान है तथा विराट नगरी के खण्डहर बड़े क्षेत्र में फैले हुये हैं। यहां सैकड़ों तालाबों के अवशेष मौजूद हैं। कहा जाता है कि पांडव द्रौपदी के स्नान हेतु एक तालाब रोज खुदवाया करते थे।9

लखवरिया- शहडोल जिले का यह गांव अपने नाम का पौराणिक आधार रखता है। इसका पौराणिक नाम लाक्षागृह कहा जाता है यहाँ महाभारत कालीन लाक्षागृह की लाख कोठरियों के अवशेष पाये गये हैं। लक्ष कोठरियो के आधार पर कालान्तर में इस स्थान को लखवरिया का नाम मिला।

पलिया- इस नाम के ग्राम पाली, पाल, पाले, पेउला बघेलखण्ड के रीवा सीधी शहडोल में पाये जाते हैं। बघेली अर्थ में पाली उस स्थान को कहते हैं जो काफी लंबा चैड़ा हो, पलिया व पाल ग्राम नाम पाली के छोटे रूप के द्योतक हैं। प्राकृत भाषा में 'पलिअ' तीन सौ बीस गुंजा की माप है और ''पल्ल'' धान्य भरने के बड़े कोठ के अर्थ में मिलता है। बघेलखण्ड में अनाज भरने के मिट्टी के कोठों को कुठिला-पेउला कहा जाता है। धन धान्य से भरपूर बघेलखण्ड में कोष्ठ या कोठो के आधार पर ग्राम नाम अधिक सार्थक प्रतीत होते है।

अमरकंटक- शहडोल वर्तमान अनूपपुर जिले का यह पर्वतीय तीर्थ दो नदियों सोन और नर्मदा का उद्गम स्थल है। कालिदास के काव्य में इसका नाम आम्रकूट मिलता है जो कभी आमों का पर्वत था आज भी यहा आम्रवृक्षों की वहुतायत है। आम्रकूट ही कालान्तर में अमरकंटक नाम से प्रख्यात हुआ। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान श्री आदित्य प्रताप सिंह जी ने सोन नर्मदा के चिर विरह का प्रतीक अमरकंटक स्थान को माना है - अमर = जो खत्म न हो कंटक = वेदना या विरह।

स्कंदपुराण में वर्णित कथा के अनुसार वर सोनभद्र तथा कन्या नर्मदाजी का विवाह होने जा रहा था। वर सोनभद्र को विवाह मंडप में आने में काफी विलंव होता देख नर्मदा जी स्वयं झाककर देखती हैं कि सोनभद्रजी नाइन जोहिला से बात करने में मग्न हैं। कन्या नर्मदा के क्रोध का ठिकाना न रहा वो विवाह न करने का निश्चय कर उसी पर्वत से छलांग लगा लीं जहाँ मण्डप बना हुआ था। नर्मदा को मनाने के लिये सोनभद्र ने भी छलांग लगाई बहुत दूर तक पीछा किये मगर नर्मदाजी हांथ न लगी। सोनभद्र और नर्मदा का चिर विछोह ही अमरकंटक नाम का हेतु बना।

रोहनिया- शहडोल जिले का यह स्थान पुरातात्विक धरोहर के लिये जाना जाता है यहाँ पर पुरापाषाण काल के उपकरण पाये गये हैं। इतिहास के पूरे मध्यकाल की मूर्तियां यहाँ वतलाती हैं कि रोहनिया के वे दिन उत्कर्ष के अवश्य रहे होंगे यहां पर एक मंदिर रोहणी देवी का भी मौजूद है जिस कारण इस स्थान को रोहनिया कहा जाता है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. विद्यानिवास मिश्र ने अपनी शब्द सम्पदा में रोहनिया का तात्पर्य जेठ के रोहिन नक्षरा के चढ़ते-चढ़ते पकने वाले आमों से माना है। यह स्थान भी अमराइयों के लिये प्रसिद्ध था अत: नक्षत्र का स्थानवाची होना भी समीचीन लगता है।

धोवहट- सतना जिले के इस स्थान का नाम अभिलेख में ''धोवट्ट पत्तन'' मिलता है। प्रो. मिराशी इस तादात्मय से सहमत थे मगर डॉ. एस.पी. चक्रवर्ती ने इसकी पहचान रीवा से 10 किलोमीटर दक्षिणपूर्व में स्थित ''धुरेटी'' ग्राम से की है। धोवट्ट और धुरेटी में शब्द साम्य न होने के कारण डॉ. मिराशी की पहचान अधिक युक्ति संगत प्रतीत होती है। धोवट्ट ही कालान्तर में धोवहट हुआ जो जातिवोधक है।10

लक्ष्मणपुर- रीवा जिले का शहर से लगा गांव है इसका पुराना नाम लौआ था। रीवा के 31 वें नरेश रघुराज सिंह ने नगर के प्रसिद्ध लक्ष्मणबाग के मंदिरों के रागभोग हेतु 28 ग्राम चढ़ाये थे यह उनमें एक था। लक्ष्मणबाग को समर्पित होने के कारण कालान्तर में इस गांव का नाम लक्ष्मणपुर रखा गया।

बैकुण्ठपुर- बघेलो की एक शाख तेन्दुन इलाकेदारो की है यह इलाका तेन्दुन इलाकेदारो को दिया गया था। इसका पुराना नाम बसरेही था जो तेन्दुन इलाके के कुछ और भू-भाग को संयुक्त कर बैकुण्ठपुर के नाम से नामांकित किया गया। यहॉ प्राचीन मंदिर व तालाब दर्शनीय है।

व्यौहारी- शहडोल जिले की यह प्रमुख तहसील है। हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल जो यही के निवासी थे,

ने एक बार व्यक्तिगत साक्षात्कार में जानकारी प्रदान की थी कि रीवा नरेश ने अपनी रानी को व्यौहार में यह ग्राम दिया था इसी कारण इस स्थान का नाम व्यौहारी है।

जनकपुर- शहडोल जिले के इस ग्राम का नाम पहले ''ओदरा'' था रीवा नरेश महराज व्यकटरमण सिंह एक बार इस गांव में पधारे यह स्थान उन्हें पसंद आया मगर इस गांव का नाम उन्हें पसंद नही आया। इलाकेदार ग्राम वुडवा से मंत्रणा कर राजा ने इस गांव का नाम जनकपुर कर दिया तब से इसी नाम से यह गांव अवाद है। एक स्थानीय शोधार्थी के शोध से इसकी पुष्टि होती है।**11**

संदर्भ -

1. प्रो. अख्तर हुसेन निजामी का आलेख - "Elephant Catching E&pedition of Sultan Mahmudashah Khilji to Bandhogarh and Sarguja (1440-1441 A.D.)"
2. ''लक्ष्मण बाग'' लेखक राजगुरू रामप्यारे अग्निहोत्री पृष्ठ-3।
3. ''तवारीख-ए-बघेलखण्ड''- तोहफये खान बहादुर मौलवी रहमान अली।
4. विन्ध्य क्षेत्र का इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व-शहडोल महाविद्यालय से वर्ष 1995 प्रकाशित शोध पत्रिका लेख-स्वयं का पृष्ठ 99।
5. ''रीवा राज्य दर्पण'' - जीतन सिंह कृत पृष्ठ 383 ।
6. ''विन्ध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल'' डॉ. कन्हैयालाल अग्रवाल पृष्ठ 91
7. ''सोन के पानी का रंग'' - देवकुमार मिश्र पृष्ठ 26
8. ''संस्कृत साहित्य को वांधव नरेशों'' की देन-राजीव लोचन अग्निहोत्री पृष्ठ 121।
9. ''महाभारत का विराटनगर'' - श्री रामप्यारे अग्निहोत्री कल्याण का अगस्त का अंक वर्ष 1948 ।
10. ''विन्ध्य का ऐतिहासिक भूगोल'' - डॉ. कन्हैयालाल अग्रवाल पृष्ठ 104।
11. ''ग्राम जनकपुर जिला शहडोल का भौगोलिक सर्वेक्षण'' लघुशोध शोधकर्ता-कृष्ण प्रताप सिंह बाघेल।

पता :- नरेन्द्र नगर, रीवा (म.प्र.)

रीवा राज्य के महाराजा गुलाब सिंह

अजय सिंह परिहार (माध्यमिक शिक्षक):- ग्राम सेमरी पोस्ट- भटनवारा जिला सतना (म.प्र.), योग्यता- स्नातकोत्तर हिन्दी साहित्य, समाज शास्त्र ,एवं बी.एड. रूचि- इतिहास भ्रमण एवं लेखन रचनाये - विन्ध्य विरासत (भाग-1) लोकगीत संकलन, विन्ध्य विरासत (भाग-2) कहावतें एवं पहेलियाँ विभिन्न पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों में लेख, विशेष- उत्कृष्ट शिक्षण हेतु कलेक्टर सतना द्वारा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित।

(रोचक प्रसंग)

परिचय-

रीवा राज्य का चहुँमुखी विकास करैं वाले महाराजधिराज श्री गुलाब सिंह का जन्म 12 मार्च 1903 (फागुन सुदी 15 वि.सं. 1960) म भ रहा। गुलाब सिंह जी के शिक्षा-दीक्षा डेली कॉलेज इन्दौर म भै। महराज धिराज का शुक्रनीति, विदुरनीति, चाणक्य नीति मुंह जवानी याद रहा। गुलाब सिंह के कार्यकाल म रीवा राज्य म अनेक सड़कै, पुल, भवन, बाँध, बिजली का प्रबन्ध, अनाथालय, महिलाश्रम, विधवाश्रम खोले गे बनवाये गें। बघेलखण्ड बैंक का निमार्ण भ। गाँव देहात म विद्यालय मदरसा खोले गे। अंक भाषा का निर्माण कीन ग। रीवा शहर म अस्पताल, डाक खाना, सुन्दर सड़कै, मेमोरियल हॉल, युवराज भवन (वर्तमान सैनिक स्कूल) राज निवास, स्वागत भवन, वेंकट विद्या सदन, राम सहाय बैजनाथ (बैजू) धर्मशाला आदि, आदि का निर्माण भ। बालिका शिक्षा हेतु सुदर्शन कुमारी औ प्रवीण कुमारी विद्यालय खोले गे।

व्यक्तित्व -

देश के सुन्दरतम राजन म महाराज गुलाब सिंह दुसरे नम्बर म गिने जात रहे। (प्रथम सुन्दर राजा नाहन सिरमूर हिमांचल) अजानुबाहु, लम्बी काया, पुष्ट शरीर, सभा चतुर, कुशल वक्ता फुर्त, अच्छे जासूस, तेज घुड़सवार, अचूक निशानेबाज, अग्रसोची, प्रजावत्सल, अति कंजूस, छद्मवेषी, अविश्वासी, हिसाबी रहे।

दानी, यद्यपि श्री गुलाब सिंह जी अति कंजूस माने जात रहे पै मौके-ठौके म, शिक्षा संस्थान चिकित्सालय औ बिटिया के बियाह म मुक्त हाथ से दान करत रहे।

विदेश भ्रमण -

इटली, स्विटजर लैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, जर्मनी, फ्रांस, और इग्लैण्ड आदि।

महाप्रयाण -

जीवन के उत्तरार्ध म महाअभियोग चला औ अत्यंन्त कष्टमय जीवन व्यतीत कीन्हिन/13 अप्रैल 1950 का मुम्बई के बीकानेर महल म छत से गिरै म महाप्रयाग (देहान्त) भ। आजौ महाराजधिराज गुलाब सिंह के मृत्यु म रहस्य बना है।

तौ अई हम पंचे महाराज गुलाब सिंह रीवा के जीवन से जुड़े कुछ रोचक प्रसंगन से आनेद लेई प्रेरणा लेई। आदरणीय विद्वान पाठकगण हमहीं अपनौ किस्सा-कहानी श्री गुलाब सिंह के प्रदान करैं, ताकि आगे संस्करण म जोड़े जांय। हमहीं जउन समाज म सयानन से, कुछ यहै-वहै से मिले ओही हम प्रस्तुत कए रहेन है। यदि कहूँ कउनौ त्रुटि होय तौ सुधार खातिर हमहीं आदेशित कीन जाय।

अति कंजूस -

महाराजधिराज अति कंजूस रहे, उनखर पोषाक अत्यन्त सादी रहत रही। घुटना से परदनी (धोती), ऊपर मिंजरखी अथवा छकलिया, मूड़े म खादी के तिरछी टोपी, पहिनैं। पै सामाजिक उत्सव, राजदरबार, विशेष उत्सव औ विदेशन म महाराज के पोषाक के देखनी बनत रही।

किला म जो कउनौ हॉकिम अफसर, अंग्रेज, राजा, महाराज गुलाब सिंह से मिलै आमै त बैठक म गिनती के चार बिस्किट, दुई आधी चाय आवै। खुद महाराज न लेय तौ मेहमानो न ले वहै मेर वापिस होई जांय और रजिस्टर (पंजी) म दर्ज होय ताकि दुबारौ काम म आवै।

जब द्याखै कि आज कुछ ज्यादा भीड़-भाड़ है तो ड्योढ़ि म खबर कराय देंय कि आज बियारी (रात्रि का भोज) न होई। खुद भूंजा चना खाय के पानी पी के सोय जाँय जउने पंगत न देय परै।

एक बेर महाराज के कहूँ जबाई होत रहै गइल (सड़क दुई कई जांय) मे भरम भ आखिरस मोटर चालक अन्नदाता के मनसा विरूद्ध मोटर चलाइस औ गंतव्य तक पहुँचाइस, महाराज खुश होइके बक्शीश दीन्हिन। पै लउटत बेरिया गाड़ी चलामै म कबहूँ हारन बजामै म, कबहूँ गलत गियर लगामै म, कबहूँ तेज बिरेक लगामै बहाने 2-2 रूपिया जुरमाना ठोंक दें। अन्त म डराइवर चिहार छाँड दइस कि अन्नदाता अब दस रूपिया बढ़ाय ग, अब बक्श देई, तब कबहूँ छाड़ै।

अइसै नातमानी म, य सरदारन के, य कहूँ जलसा म जाँय तौ डराईवरौ खूब विदाई पावै। महाराज सोंचे य ता मोरे कारण एतू बक्शीश बिदाई पावत है। तौ बहुरती बेरिया औसे कबहूँ सिगरेट, त कहूँ बिस्किट, त कहूँ कुछू, त कहूँ कूछू मगामैं। जउने वाखर बिदाई बढ़ाय जाय। और डराइवर बपुरा गोहार मारै कि अन्नदाता सब बढ़ाय ग। खीसा खलाय दे।

लहाउ-

रीवा म एक रहै पुस्सू कुम्हार, शहर से लगी वाखर जाघा बहुत रहै, पूरे शहर म ईंटा दे, ,खूब बड़ा मनई रहै। महाराज कबहूँ पुसउ का बोलवाय लेंय अथवा खुदौ औसे मिलें पहुँच जाय। पुसउ मारे खुशी के नज़र निछावर करै। औ महाराज कउनौ न कउनौ बहाने कि पुस्सु भाई नातन के लाने कोठी बनवामै का है, जाघा चाही, पुस्सु दीन्हिन राज निवास बना। कबहूँ पुस्सु लरिकन का कॉलेज बनवामै का कुछ जाघा बेंचा - पुस्सु अन्नदाता सब अपनै के आय छिंदाय लीन जाय, सो जाघा लईके बना दरबार कॉलेज (वर्तमान ज्ण्त्पै बवससमहमद्ध एक बेर पुसउ युवराज के रहैं के जाघा किला म कम परत ही। पुसउ- सब अन्नदातै केर आय, जाघा लीन गै औ युवराज भवन बना (वर्तमान सैनिक स्कूल) आस-तस के पुसउ का लहाय- बिहाय, कबहूँ कुछू इनाम बक्शीश दै, बहुत एक जाघा राज म लई लीन गै।

किला के मनौतिहा हाकिम म रहे एक पाण्डे (मडरिहा) इलाहाबाद रोड म बनवाइन जोरदार कोठी, खिचरी के साइत आई तौ पांडे जी दु:सासत म परे कि जो अन्नदाता (श्री गुलाब सिंह) क बोलाइत है त कहूँ कोठी मांग न लें, नहीं बुलाई त राजा भुकुर जइहैं मुश्किल परी, बड़ी उहापोह म आखिरस महाराज क नेउतिन। महाराज के अवाई भै, कोठी दिखिन खूब सराहिन, कहिन पांडे अइसन करा कि य कोठी कुछ रोज क युवरानी साहिबा (प्रवीण कुमार जी) के रहैं का दई देत्या, फेर जब युवराज भवन (सैनिक स्कूल) दुरूस्त होई जई तौ वमा रहाइस कराय दीन जई, कारण किला म संकेती है। पाण्डे जी का अंदेसा रहा तउनै भ (मरते का न करते) कहिन सब अन्नदातै केर आय। हले कुछ रोज के निता का महामन्या प्रवीण कुमारी बाई जी राजे रहीं, फेर वमा प्रवीण कुमारी के नाम कन्या विद्या. खोल दीन ग। जउन वर्तमान म पी.के. स्कूल के नाम से जाना जात है।

छद्म वेषी-

महाराज गुलाब सिंह अपने रैय्यत के हाल-चाल दु:खहाली, खुशहाली जानै के खातिर, हाकिम अफसरन के परीच्छा लेय के खातिर मेर-मेर के स्वांग करिके रात बिरात दिन दुसरे बागा करैं। अइसै एक घटना है कि सोहागपुर गढ़ी म कुँवर मृगेन्द्र सिंह साहब के जनम उपलक्ष म जलसा होंय क रहै। लालजी साहब सोहागपुर रीवा किला म अन्नदाता का नेउता देंय पहुँचे। महाराज से विनती-पारी कीन्हिन, महाराज तिथि समय सब पूछ लीन्हिन, औ पहुँचे के असमर्थता बताइन कि बहुत राज-काज है समय न लागी पै हमरी कइत से नाती राजा का य उपहार दीन जाय, कुछ दीन्हिन।

नियत समय म जिन्हा सोहागपुर म जलसा होय क रहा तौ सकारे-सकारे रीवा से निकल परे, किला म झण्डा न निकाला ग (नियम के अनुसार जब राजा किला से बाहर होय तौ झण्डा निकाल दीन जात रहा।) कोहू का कउनौ खबर न होय तौ सलामी न भै। महाराज सोहागपुर गढ़ी म कुम्हरा के वेष बनाय बड़ा सफेद मुरइठा, काने म लुरका, लील फतोही, मइल परदनी पहिन चुपचाप रैय्यत के बीच जाय के बइठ गे। और दिखिन के राज के सबै करमचारी हॉकिम पयादा जलसा म पतुरिया के नाच म मगन हैं। बैंक अधिकारी, तहसीलदार, दरोगा, मजिस्ट्रेट आदि। यतने म दरोगा महाराज के डराइवर का चीन्ह गे सो सबका बताइन के लागत है अन्नदाता पधारे है,उनखर डराइवर अस देखान है, पै कोउ मानिन न, दरोगा जी थाने का भगै, यहाँ जउने जउने अधिकारिन का महाराज देखिन तउने-तउने दफ्तर म छापा डार दइन, सबके ऊपर जुरमाना पै दरोगा थाने म मिल गे। महाराज पूछिन के तुम त जलसा म रह्या हेन कइसे पहुँच गया, सही-सही बतावा, दरोगा तरी का मुँह करके कहिन हुकुम अन्नदाता डराइवर चिन्हाय ग। महाराज कहिन अरा! हेइने ठे चुक्का खाय गयन। दरोगा जी जुरमाना से बच गे।

जासूस/खुफिया -

एक बेर बैंक म चोरी भै, पुलिस दरोगा कुछु करै न पावैं, महाराज का बहुत दबाव रहै कि चोर जल्द से जल्द पकड़ा जाय। पुलिस

च्वार से मिली रहै। अन्त म एक रोज महाराज खुदै पहुँच गे जहाँ से सेंध भै रहै तौ गौर से मुआयना कीन्हिन, दरोगा का आदेश करिन की बैंक मैनेजर का पकड़ लीन जाय। सख्ती कीन गै तो बैंक कर्मचारी, अपराध कबूल कई लीन्हिन। कारण जहाँ सेंध भै ते तौ मलवा बैंक के भीतर न ग ते, सब बहिरेन रहैं जाने मिल ग सेंध भीतर से भै ही चोरी देखामै का।

प्रजा वत्सल –

महाराजधिराज श्री गुलाब सिंह एक बेर संझा बेरिया संगीत सभा म गीत – संगीत का आनंद ले किला म रहे ते तबहिन रयार मची कि फला भड़ भूंजा के भाड़ से आगी लग गै। बात किला तक पहुँची अन्नदाता महाराज संगीत सभा छाड़ धावत् गे भड़ भूंजा के ठाट म चढ़ गे औ खुदै गगरी कलशा लै–लै आगी बुतामै लाग। महाराज का आगी बुझावत देख रैय्यत उत्साह से आगी बुझामै म लग जउने भुंजवा के घर म आगी लगी रहै, व रोमै लाग आगी लगे के दु:ख म नहीं, बल्कि खुशी के मारे कि ज्याखर राजा यतना दयालु होई कि काम म लग जाय ओखे परजा का कउनौ कष्ट नहीं होई सकै, आगी बुझे के बाद महाराज वाखा उचित राशि घ के मरम्मत खातिर दीन्हिन। यंतर के एक नहीं कइयक किस्सा जउन जनमानस म फइली है।

महादानी –

पूर्व मा महाराज श्री गुलाब सिंह जू देव का अति कंजूस बतावा ग है, अब महादानी विसंगति है, पै महाराज अईसै रहै। जब जानै कि जन हितार्थ काम आय तौ मुक्त हाँथ से दान देत रहे।

एक बेर के घटना बताई जात है कि पं. मदन मोहन मालवीय जी काशी हिन्दू वि. वि. के खातिर देश के बड़े–बड़े राजा–महाराजा रईस, सेठ–साहूकारन के नेरे जाय चंदा वसूल करत रहै, यहै तारतम्य म पण्डित जी रीवा पधारे, महाराज गुलाब सिंह के पास संदेशा पहुँचा के पण्डित जी मिला चाहत हैं। महाराज का पता रहै कि पण्डित जी सबसे रकम ऐंठ रहे है सो कहवाय दइन कि उनखर ''हेन दाल न गली'' अर्दली पण्डित जी से जाय के बताइस तौ पण्डित जी कहिन की ''जो रीवा का पानी म दम होई तो दाल गली'' महाराज का पता चला तुरतै अपने रहाइस से उतर के आये पण्डित जी के खूब खातिरदारी करवाइन औ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के खातिर व जमाने का रूपिया ग्यारा लाख एक मुश्त दीन्हिन और आग्यों देय का वचन दइन।

देश के हर बड़े शिक्षा संस्थान म महाराज गुलाब सिंह दान दात म अग्रणी रहे, चाहे डेली कॉलेज इन्दौर होय, चाहे मेयो कॉलेज अजमेर, ठभ्न् बनारस य कउनौ सब म महाराज बढ़ चढ़कर के दान दीन्हिन।

शिक्षक के प्रति सम्मान –

महाराज श्री गुलाब सिंह शिक्षक वर्ग का अति सम्मान करत रहे, एक बेर का किस्सा श्री राम टहल तिवारी जी सुनाइन।

महाराज के कहूँ बाहर जवाई होय का रहै, सैलून (रेल बोगी) सतना म खड़ी रहत रही एसे महाराज सतना से सैलून के सवारी कर अन्तै जावा करैं। सो एक बेर रीवा से सतना महाराज के सवारी आमै का रहै, माधवगढ़ के लोगन का पता चला सो महाराज से विनती पारी करैं के निता सब जने मुख्य सड़क म महाराज के स्वागत के प्रबंध करिन तुरतै वंदनवार, तोरण द्वार बनाय के जुरे ! महाराज के अवाई भै मोटर रूकी। जयकारा भ। महाराज जब बइठै का बढे तो पूछिन कि '' य कुर्सी के खे हेन से आई ?'' (व जमाने म कुर्सी सबके नहीं रहत रही, जुजबी कोहू कोहू के तखता मिलत रहे। बाकी लोग चउरा दरी चटाई कमरा से काम चलावैं।) बतावा ग कि पाठशाला से मँगाई गै। महाराज बइठै से मना करन दइन कि यमा हम बइठै के अधिकारी नहीं आहेन। य गुरू का आसन आय। आनन–फानन म कोहू के हेन से खटिया आई, महाराज बिराजे दरबार भ फरियाद सुनिन, हँसी मसखरी भै महाराज रवाना भे।

अइसै एक घटना चन्द्रिका प्रसाद जी शुक्ला, रीवा से जानेन कि महाराज कबौ–कबौ गांवन म ड्यारा डार के गांव – गमइन के फरियाद सुनै, निराकरण करै, लोगन के हाल–चाल जानै। एक बेर कउनौ गोंव म महाराज के शिविर लगा पाल–तम्बू ठोके गे। महाराज गांव बागत घूमत पाठशाला पहुँच गे, पाठशाला के गुरूजी महाराज क देखतै झट से ठाड़ होइगे। महाराज कहिन '' अरा ! र ! र ! र ! गुरूजी अपना तो अक्षम्य अपराध किहन, सांझ के शिविर म अवाई होय, गुरूजी के चीरे लोभ नहीं, घबड़ाय गे, सुखायगे। भ महाराज पाठशाला का मुआयना करिन कुछ लडकन से पूछिन पछोरिन बहुर गे। संझा ब्यारा गुरूजी महाराज के शिविर म हाजिर भे । महाराज अपने तंबू म बोलवाइन, बड़े आदर के साथ कहिन गुरूजी अपना के विद्यार्थिन के सामने कोहू के सम्मान म खड़ा होब शोभा नहिं देय। विद्यार्थिन का लागत है कि हमार गुरूजी सबसे बड़े जब अपना कोहू का सम्मान द्याब तो उईं सोचिहै कि हमरे गुरूजी से भी कोउ बड़ा है। जई आइन्दा से ख्याल रखब। गुरूजी के मारे खुशी के आंसू छलछला आये।

यंतर के बहुत उदाहरण है।

(अन्य रोचक प्रसंग)

तेली के किस्सा –

एक बेर एक तेली आपन टोपरी म हड़िया तेलइया परी धरे तेल बेंचत बागत रहे। बगतै–बगतै किला तक पहुँचा वहै समय महाराज के सवारी पुतरिहा दरवाजा से निकलै का रहै, फउज पलटन तैयार भै सलामी भै, लोग दरवाजा के पास राजदर्शन किता खड़े होइगे। व वपुरा तेली महाराज दर्शन खातिर खडा होइगा। महाराज मोटर से सबके सलामी जोहारत निकले औ किला छोड़तै तेली पै नजर पर गै,, महाराज भुकुर गे, कोतवाल का बोलाय तेली का बंद कराय दइन, सवारी आगे बढ़ गै। बात आई – गई।

संझा बेरिया जब महाराज लउटे औ अपने दफ्तर म विराजे दिन भर के काम काज का पड़ताल करत रहैं, तबहिन कोतवाल सा, अर्जी लगाइन कि हुजूर व तेली के खातिर का हुकुम होत ही ? महाराज के हुकुम भै कि हाजिर कीन जाय, वपुरा हाजिर भ, हाँथ जोड़। महाराज – कहिन जब जानत रहै कि महाराज के सवारी निकल रही तौ दरवाजा म काहे ठाड़ भै ?

तेली: अन्नदाता गल्ती माफ होय ठाड़ ह्वाब कउन गुनाह ?

महाराज: अइसन मानिता है कि सकारे तेली का मुह देखे काम सफल नहीं होय दिन खराब जात है।

तेली: का महाराज के साथ अइसा कुछू भा ? (महाराज सोचिन अइसा कुछु भा रहा)

महाराज: अइसा भा तो कुछु नहीं पै फेरौ –

तेली: अन्नदाता आज महूँ सकारे–सकारे एक चक्रवर्ती महाराज के दर्शन लिहौ, तेल न बिका, भूखन मरयो, हवालात म गयो सो अलग।

महाराज गाज अस मारे रहि गे, वाखर पूर तेल धराय, तेल के कीमत और ऊपर से कुछू बख्शीश दई विदा कीन्हिन।

लामट बेटा–

जइसा कि पूर्व म बतावा ग कि महाराज समय–समय मा राज कि विभिन्न क्षेत्र म ड्यारा शिविर लगावा करै, लोगन के फरियाद ज्यमा मेर – मेर के वाक्या घटैं, अइसै एक बेर महाराज का ड्यारा कउनौ आदिवासी अंचल म परा जहाँ एक फरियाद आई मेहरी – मनुष का झगड़ा रहै, उनके बीच एक लड़का रहै जेही मनुष राखै का तैयार न रहै औ मेहरी कहै मै साथै रखिहौ। झगड़ा महाराज सुनिन तौ व आदिवासी से पूछिन कि ''भाई तो ही बेटा का साथ राखै म का आपत्ति ? बेटा तो बाप महतारी के साथै रहा चाही। आदिवासी कहिस नही राजा य मोर लामट बेटा आय एसे मै न रखिहौं। महाराज पूछिन कि य लामट बेटा का आय ? आदिवासी य मेर समझाइस, कि सुन राजा जइसा मै तोरे महतारी का राख लेव औ तै पहिलेन से है त तै मोर लामट बेटा। आदिवासी के य अभद्रता म दरबारी लेाग दपटिन तौ महाराज इशारा कई के शांत करिन कि आदिवासी आय व बहुत मान–मर्यादा, कायदा–तहजीब नहीं जानै। मनै मन विदुरान खैर व लामट बेटा का राजकीय सेवा म लई लीन ग।

रिसान मेहरिया –

एक बेर अइसै महाराज का कहूँ ड्यारा परा, एक फरियादी आई कि अन्नदाता सरकार मोर मेहरिया मइके से मोरे साथ जातिन नहि आय जबकि मै सब मेर से कह बताय के हार गयौं, मेहरिया के न गये मोर सयान बाप–महतारी अहिमक परेशान हैं।

महाराज फरियादी के मेहरिया औ ओखे बाप का बोलाइन औ पूछिन बाप बिचारा सरकार मै बहुत समझायौ पै मोर बिटिया जांय का तैयार नहि। महाराज बिटिया का समझाइन पै बिटिया टस से मस न भै साफ मनाही कर गै हुजूर मै कइसौ न जइहौ मोर एखे साथ निवाह गुजारा न होई।

महाराजौ अपना असमर्थता प्रकट करिन कि बताव भाई जब य नहीं जा चाहै ता वमा हम का कर सकित हैं ? फरियादी धरती माता का प्रणाम करिस औ कहिस कि मोरे गोहार यत्ती बड़ी रीमा राज क का होई ?

महाराज पूछिन: काहे !

फरियादी: सरकार गलती माफ होय जो महाराज के कहे म एक ठे रड़री मेहरिया नहि आय तौ य रीमा राज कस के चली।

महाराज चउवाय गे सैनिकन का कहिन कि ए खे ससुरे पहुँचाय के आवा जादा न नुकुर करै तो पसोटत लई जया।

टठीहा–

महाराज गुलाब सिंह हाँका, शिकार के बहुतै शौकीन रहे, कबौ–कबौ सुदूर अंचलन म कैम्प डार के रैय्यत के जानकारी – फरियाद लें औ शिकारौ आदि ख्यालै, एक बेरिया उमरिया कइती जंगल म

महाराज का ड्यारा परा ज्यमा बहुत के राव सरदारौ हाकिम अफसर रहै, जंगल म हांका भ, जेवनार बनी, पंगत लाग, रीति के अनुसार अन्नदाता का बड़ा पनमार, सगौआ लोगन का दोनिया-पतरी म जेवनार परसी गै, कौतूहलवश गांव के ग्वांड बइगा देखत रहैं। आपस में बताये कि ''अरा ये राजा बहुत गरीब है पतरा म खात है चला टठिहा लै अई'' सगले अपने-अपने घरन का दउरे टठिया लय आये, टठियन का अंबार लग गा। राजा खुश भे औ हुकुम दइन कि य गांव से जमा तिहाई, लगान न लीन जई, ओखे बदले टठिया लीन जई, य मेर से सालै टठिया (थाली) लीन जाय लागी।

लालच -

पुराने जमाने म ऊंच-नीच, जात-पात, खान-पान, हुक्का-पानी, छोटे-बड़े का भारी भेद माना जाता रहा, खाँय-पियै म बहुत विवके से काम लीन जात रहा, काज-बियाह म बहुत विचार कीन जात रहा। सबके आपन-आपन पटल रही। कच्ची-पक्की रसोई पर विचार कीन जात रहा। औ तकरीबन सबै जातन म ई छीर-विवक रहा। को जात से उतरे, को पाँत से उतरे, के खे भात खावा जई के-खे नहीं आदि-आदि...।

महाराज के सेवा म सबै मेर के मनई ऊँच-नीच पद म रहे। एक सरदार जे महाराज के सेवा म रहै पै पंगत म राजा के साथ नहि बैठ सकत रहे, य बात उन्ही बहुत अखरै, धन-ड्यारा से बड़े मनई रहै, किला के बड़े मनौतिहन म रहै, पै पाँत से उतरे रहै। उई महाराज के कमजोरी लखैं-जानैं। सो जुगत भिड़ाइन, महाराज लालची हैं, सो गुटरगूं महाराज से करिन, लालच दइन, महाराज भात दें क तैयार भे। (परंपरानुसार पाँत म मिलावे के परंपरा) दिन-तिथि मुकर्रर भ। कि फलां रोज सब सरदार फला जाघा चल के महाराज के साथ भात देंय म शामिल होइहैं।

अब सगले सरदार भितरै-भितर कुढ़े जाँय, पै महाराज से विनती - पारी के हिम्मत न रहै। अपसै म खुसुर-फुसुर चल रहीते। कि महाराज क कइसन रोका जाय। य बात एक गरीब बाह्मन सुनिन कहिन हम महाराज क भात देंय से रोक सकित है, पै अपना पंचे हमरे जान के जिम्मा लेई। सगले सरदार इलाकेदार, कहिन कुछु करा महाराज क रोका, जाँय न पामै। निश्चित तिथि म महाराज का काफिला तैयार भ मोटर लगी, आगे-पीछे के सरदार सधे। पलटन लगी। निनाद भ, महाराज के ऊपर से अवाई भै, मोटर म बिराजे, तबहिन बाम्हन मोटर के सामने आओ जोर से कहिस ''राजा तोरे तउल भर स्वान द्याहौ जो तै मोर मइला खाय ले।'' महाराजा चिल्लान!!!, होट! पकड़ा-पकड़ा। ब्राम्हण रफूचक्कर, सरदार लोग ब्राम्हन का अलोप कई दीन सब पहिलेन से सदियां-बदियां रहै। महाराज का मुण्डा सनका, मोटर से उतरे, ऊपर चले गे। तैयारी खतम। कार्यक्रम खतम। अब बम्हनउ के सिट्टी-पिट्टी गुम। काहे कि जानै महाराज के खुफिया बड़ी तगड़ी है, यहैं सगले सरदारौ हाथ खड़ा कई दीन्हिन कहिन ''गुरू अनूतर काहे कह्या?'' बपुरा बाम्हन के चीरे लोभ नहीं। बिहन्ने दूसरे रोज सकारे-सकारे ब्राम्हन देउता गोहार मारत, चिहार छाड़त किला म पूरबी दरवाजा से घुसे, महाराज ऊपर झरोखा से सब लखै, ऊई गोहार मारे रहै, वा दादा मोरे कीरा परै, मोही मउत आवै, हे भगवान मै य का किहौ? महाराज बोलाय पठइन, अन्नदाता के नेरे ब्राह्मन खूब रौबें, महाराज डपटिन कि चुप्प! गुरू चुप्प!

महाराज पूछिन कि ''फुर-फुर बतावा य मेर काहे किहा? औ के खे कहे से किहा?

गुरू: अन्नदाता मोही लाग य गलत होइ रहा औ सबके मंशा य करै के नहिं आय तौ मै कर दिहौ, मै दण्ड का भागीदार हौ।'' औ य न पूँछी कि के खे कहे से किहौ'' बताय द्याहौ तौ उई मार डरिहै, न बतइहौ तौ अपना मार डारब। सरकार मोही अपना के मारे मंजूर। सगली गलती मोर।

महाराज: देउता किहा तो नीक पै तरीका गलत रहा। ऐसे न तुहीं इनाम न दण्ड। जा तुम बख्शे जाते हया।

बाह्मन देउता: महाराज के जय हो। बांधव गद्दी अमर रहै। कहत चले आये।

पारखी/परीक्षक -

महाराज गुलाब सिंह लोगन के मेर-मेर से परीक्षा ल्यात रहे। उनखे अमल म रामपुर बाघेलान के नेरे के (शायद तया गांव) कउनौ वैद बड़े जगजाहिर रहैं उनही नाड़ी का निकहा ज्ञान रहै। दूर-दूर क मनई उनखे नेरे आयै। उई डोरी के माध्यम से नाड़ी के चाल बताय देत रहे। दुनिया भर के रोगी उनखे नेरे जाय औ वैद बाबा ओही नीक करैं। महाराज गुलाब सिंह उनखर चर्चा सुनिन तौ रीमा बोलवाइन बैद बाबा महाराज के ड्याढि म हाजिर भे।

पँयलगी परनाम के बाद महाराज कहिन-

वैद बाबा सुनेन कि अपना क नाड़ी क निकहा ज्ञान है, का बताई महारानी के चैथिया ठीक नहीं होवे आवै बड़े-बड़े डाक्टर वैद देख चुके। वैद बाबा सूत के माध्यम से नाड़ी के गति सुनै लाग, महारानी

सा. पर्दा के भीतर रहैं। वैद बाबा लख लिहिन कि महाराज मोर परीक्षा आय लेत हैं। वैद बाबा कहिन अन्नदाता नाड़ी तो ठीक ही पै य बतावा जाय कि महारानी साहिबा भूसा कब से खांय लागी? कारन कि महाराज पर्दा के पीछे गइया बधाय दइन तै ओहिन के गोड़े म सूत। महाराज दै ठहाका हँसे, कहिन-मान गयन, मान गयन! महाराज, मान गयन!! जेतना, उनखे मिजरखी म रूपिया रहै सब इनाम म दइन औ उनके निता कुछ गाँव लगाय दइन कि रोगिन के निकही दवाई होय।

दूरदर्शी-

महाराज गुलाब सिंह का अहसास होइगा रहा कि आगे चल के राज-पाठ रही न जई, देश के व्यवस्था दूसरे मेर हुवै सकत है सम्पत्ति जस हुवै सकत है। एसे अधिकांश सम्पत्ति, बैंक खाता आदि बगैर कउनौ उपाधि (राजा-महाराज) गुलाब सिंह उपरहटी रीवा के नाम से करिन। व सम्पत्ति आजौ सुरक्षित है।

रिश्ता निवाह-

रीमा के एक सेठ (ठाकुर प्रसाद) महाराज गुलाब सिंह के बड़े मनौतिहन म रहे, दैवी गति से रह न गे, उनखे लडका का बियाह भटनवारा के सेठ सरमन दास (अगरवार) के हेन भ। महाराज समधी बन के भटनवारा (राज्य नगउद) पधारे, जनवास रहा सड़क किनारे ठकुरन के बगइचा म तहाँ रूके। जब बारात सेठ के दुआरे लगी त सेठन के पोषाक म बारात के साथ खड़े रहे। सेठ विनती करिन कि अन्नदाता कुटिया म पधार लीन जाय कुछु कलेवा (नाश्ता) होई जाय। महाराज कहिन आज हम समधी बन के आयन है न कि महाराज हमरे साथ वहै व्यउहार होय जउन हर बराती के साथ हम खाब खबाउब जनमासे म करब। उल्लेखनीय है कि व समय के रीति रिवाज के अनुसार दुआर पूजा म बराती खड़े रहै औ घरातिन के साथ बात व्यउहार होत रहा। तत्कालीन ठाकुर भटनवारा श्री राजेन्द्र बहादुर सिंह (गोपाल जी साहब) प्रस्ताव राखेन कि गढ़ी पधारा जाय उनहूँ क जबाव कि बहनोई सा. आज हम सेठ बन के आयन है। फेर रातै मोटर से रीवा रवाना भे।

(गोपाल जी साहब के ससुरार लालगांव म रही कन्यादान महाराज व्यंकट रमण सिंह लइन रहा औ बियाह सतना कोठी (वर्तमान इन्द्रा कॉलेज) से भ रहा य नाते गुलाब सिंह बहनोई साहब कहत रहे। कन्यादान के बाद सतना शहर म घर पैपखार भ कर्पवाह गांव और समधी मना सिंह भत खवाई हाथी और भारी दइजा महाराज वेंकट रमण सिंह दइन रहा।)

अइसन रहे महाराज गुलाब सिंह रीवा। जउन सुनेन, पढ़ेन, जानेन, समझेन प्रस्तुत कर दीन। हमार मंशा कोहू के दिल दुखामै औ खुश करै के नहिं आय। छोटी-बड़ी अनेकानेक किस्सा रिमही जनमानस म फइली है बड़े चाव से कही-सुनी जाती है। उनहिन म कुछ लई लीन। अबै अउरौ किस्सा हैं।

अपना पंचन केन स्नेह् सानिध्य बना रहै।

'धन्यवाद'

अजय सिंह परिहार
सेमरी (भटनवारा) सतना
8718010504, 9407820141

भरहुत स्तूप

डॉ. सुद्यम्न आचार्य :- सम्प्रति सतना में स्थायी रूप से निवासरत्। वेदवाणी वितानम के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में प्राच्य विद्या के लुप्त प्राय: ग्रंथो के शोध/अन्वेषण एवं प्रकाशन में रत है। डॉ. आचार्य राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त संस्कृत के विद्वान हैं। शिक्षार्थी के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुये एम.ए. में 6 स्वर्ण एवं 3 रजत पदक प्राप्त किए। लगभग 38 वर्षों तक संस्कृत भाषा के शिक्षण में संलग्न रहे। आचार्य को यूपी संस्कृत संस्थान द्वारा व्यास पुरस्कार से अलंकृत किया जा चुका है। संस्कृत मे उत्कृष्ट योगदान के लिए उनकी गणना विश्व के प्रथम 5000 संस्कृत विद्वानों में होती है। उन्होंने प्राच्य विद्या एवं विज्ञान पर अनेकों तुलनात्मक एवं गवेषणात्मक ग्रन्थों की रचना की है। सम्प्रति वेदवाणी वितानम के माध्यम से पुरा साहित्य पर शोध, अनुसंधान एवं उसे प्रकाश लाने का कार्य करते हुए संस्कृत भाषा की सेवा मे रत है।

मरहुत स्तूप की एक अनकही कहानी - देश के राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न का द्वितीय उद्गम स्थान

संकलन - राष्ट्रपति सम्मानित सुधुम्न आचार्य

भरहुत स्तूप उन्नत कलाकृतियों, विविध दृश्यों के लिये प्रख्यात रहा है। उसमें धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक प्राकृतिक दृश्यों के साथ-साथ जातक कथाओं का सुन्दर चित्रण प्राप्त होता है। इससे प्राचीन विश्वास, परम्पराएँ तथा उस समय घटित अनेक घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। अपनी उत्कृष्ट कला के लिये यह विश्व में ख्याति प्राप्त कर चुका है।

इतिहासकार ने इसकी कला तथा विशेषताओं का विस्तार से निरुपण दिया है। तथापि एक दृश्य ऐसा है, जिस पर विद्वानों का ध्यान नहीं जा सका है। इसके एक दृश्य में समूचे स्तूप का एक मॉडल उत्कीर्ण किया गया है। इसके बांई ओर छोटे आकार में तीन सिंह अभिचित्रित हैं। ये सिंह एक वर्गाकार गमले जैसी आकृति में सुप्रतिष्ठित हैं। इसके ऊपर अनेक पशु उकेरे गए है (यह गमला अनेक सूची के आकार के स्तम्भ पर खड़ा किया गया है। इसके पीछे दो भिक्खु त्था एक भिक्खुनी इसकी उपासना कर रहे हैं। यह समूचा दृश्य पवित्र बोधिवृक्ष के नीचे अंकित है।

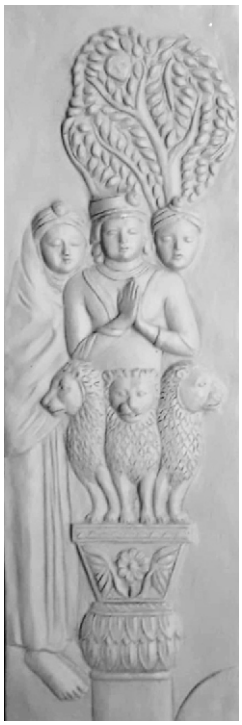

हम जानते हैं कि इस त्रिसिंह का दृश्य सारनाथ में अंकित हुआ है। वहां इसके ऊपर धर्मचक्र को स्थापित किया गया है जो कि सारनाथ में गौतम बुद्ध के पवित्र धर्मोपदेश का प्रतीक है। यह अत्यन्त पूजनीय के रूप में ख्याति प्राप्त है। यहां यह त्रिसिंह गोलाकार प्रस्तर खण्ड पर तथा वह एक स्तम्भ पर प्रतिष्ठित है। इस प्रस्तर खण्ड पर भी अनेक पशु उकेरे गए हैं।

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने साँची में भी इस प्रकार के दृश्य के उकेरे जाने की सूचना दी है। परन्तु अभी तक किसी विद्वान् ने भरडल्लो इस दृश्य-शिल्प का वर्णन नहीं किया है। इस दृश्य के अतिशय महत्व का अनुभव करते हुए हमने इस दृश्य की ड्राइंग के द्वारा विस्तारीकृत रूप दिया। इसकी सभी विशेषताओं को उजागर किया। इसके पश्चात एक उन्नत स्तम्भ पर नर्वनिर्मित Mixed Media Art में अतिसुन्दर अभिचित्रित किया है। दृश्य इतना सुन्दर है कि यह किसी सुन्दरतम कला के समकक्ष कहा जा सकता है। इसे भरहुत चित्रकला मूर्तिकला म्यूजियम, सतना में सुप्रतिष्ठित किया गया है।

इस दृश्य से यह प्रकट है कि यह सारनाथ की अनेक विशेषताओं को समेटे हुए है। साथ ही अनेक दृष्टि से उससे भित्र भी है। इसमें धर्मचक्र के प्रतीक को नहीं उकेरा गया है, अपितु कला के समूचे कौशल के साथ त्रिसिद्ध को चित्रित किया है। इससे प्रकट है कि यहाँ कलाकार ने उपदेश को चारों दिशाओं में पूरी शक्ति के साथ गुंजाय मान करने पर अधिक जोर देना चाहा है। जैसा कि हम जानते हैं कि ये सिंह गोतम बुद्ध के धर्मोपदेश को पूरे विश्व में सम्प्रेषित करने वाले के प्रतीक के रूप में जाने जाते हैं। सम्पूर्ण जनता सिंह के समान महाबलशाली होकर इस पवित्र धर्म चक्र को दिग् दिगन्त में प्रचारित करने के लिये जुट जावें, यह इस त्रिसिंह का संकेत है। इससे सम्राट के महाबलशाली चक्रवर्ती होने का तथा चहुँ ओर राज्य व्यवस्था के सुदृढ़ होने का संकेत भी प्राप्त होता है।

इस दृश्य में कलाकार ने यह भी प्रकट करना चाहा है कि लोग इस धर्मचक्र को प्रचारित करने के कार्य को बहुत आदर एवं सम्मान से देखते हैं। सभी दिशाओं के लोग इसकी व्याख्या करने तथा जन जन तक प्रसारित करने के कार्य में पूरी निष्ठा के साथ लगे हुए थे। इस भावना को प्रकट करने के लिये कुछ भिक्खु लोग इसकी उपासना करते हुए दिखाए गए हैं। इनमें एक भिक्खुनी भी है, जिससे प्रकट है कि उस धर्म सङ्घ में भिक्खुनियों का भी प्रवेश हो चुका था। इस प्रकार उनका उपदेश मानव मात्र के लिये स्वीकृत हो गया था।

भरहुत स्तूप में यह दृश्य बोधिवृक्ष के नीचे अंकित किया गया है। हम जानते हैं कि बौद्ध धर्म में बोधि वृक्ष अत्यन्त सुपूजित है, जिसके नीचे गौतम बुद्ध को बुद्धत्व प्राप्त हुआ था। आगे चलकर यह स्थान शान्ति, करुणा, दया अहिंसा गौतम बुद्ध का प्रतीक बन गया था। इस दृश्य से कलाकार ने संकेत दिया है कि बुद्ध का यह पवित्र धर्मोपदेश अत्यन्त सुपूजित स्थान से सम्प्रेषित किया जा रहा है। इस प्रकार यहाँ सम्पूर्ण परिवेश को भी सम्मानित बनाने का उपक्रम किया गया है, जो कि अन्यत्र प्राप्त नहीं है।

भरहूत स्तूप में अन्य स्थान में धर्म-चक्र को भी प्रदर्शित किया है। एक दुर्लभ दृश्य में कोसलनरेश प्रसेनजित् धर्मचक्र की प्रदक्षिणा करते हुए तथा पश्चात उसकी पूजा करते हुए दिखाए गए हैं। इससे नीचे के दृश्य में प्रसेनजित एक रथ में बैठकर प्रदक्षिणा के लिये जाते हुए चित्रित किये गए हैं। इसके अभिलेख में ''भगवतो धम्मचकम (भगवतले धर्मचकम) तथा राजा पसेनजि कोसलो'' (राजा प्रसेनजित कोसल) लिखा है। महान पुरातात्विक कनिघंम ने माना कि यह दृश्य असाधारण महत्व का है। क्योंकि यह अभिलेख के साथ एक राजनीतिक घटना का दुर्लभ वर्णन करता है।

भरहुत स्तूप में प्रतीकों का उपयोग तथा धर्मचक्र का दृश्यांकन बहुत महत्व रखता है। बुद्ध से पूर्व ऋग्वेद से लेकर रामायण, महाभारत की लम्बी परम्परा में काल चक्र, सुदर्शन चक्र, सहस्रार चक्र आदि का विवरण प्राप्त होता है। इनकी व्याख्याएँ भी बहुत परिष्कृत है। चक्र को उपाधि के साथ इन्हें अनादि, अनन्त की भावना संकेतित की गई है। इनके बहुमूल्य होने के साथ सर्वत्र प्रसारित होने की भावना भी इससे प्रकट होती है। धर्म चक्र में भी यह सम्पूर्ण भावना परिव्याप्त है। परन्तु इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ इस भावना को साकार रूप दिया जा सका है। इससे पहले के सभी वर्णन श्रवणीय रहे हैं। सम्राट अशोक से पहले कलाकृतियों का निर्माण होता तो था। प्राचीन ग्रन्थों में इसके बहुत प्रमाण उपलब्ध हैं। परन्तु पुरातत्त्व में ये कलाकृतियाँ अति स्वल्प मात्रा में उपलब्ध है। सम्राट अशोक से ये पर्याप्त मात्रा में भव्य स्वरूप में प्राप्त हैं।

भरहुत स्तूप सारनाथ और साँची की तुलना में किंचित भी कम नहीं अपितु कुछ अर्थों में अधिक ही है। त्रिसिंह और धर्मचक्र से समग्रता के बोध के लिये भी हमें सभी समान कालाकृतियों की विशेष रूप से तुलना करनी होगी। यह भी हो सकता है सारनाथ और भरहुत के एक ही कलाकार ने त्रिसिंह की रचना की हो। परन्तु रचना के समय उसकी दृष्टि निश्चय ही भिन्न-भिन्न प्रकार की थी।

यह बहुत सुखद है कि विन्ध्य की धरा को भी इस कला का साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। किसी कला के महत्वपूर्ण बनने का श्रेय अधिकांशत: उसके व्याख्याकारों को जाता है। यह विन्ध्य जनों का कर्तव्य है कि भरहुत स्तूप के त्रिसिंह के दृश्य को अधिकाधिक प्रचारित करने का प्रयास करें। अनाम स्थान में रहने वाली वस्तु का महत्त्व उसके प्रचार से ही सम्पन्न हो सकता है।

भरहुत ही कलाकृतियों को प्रचारित करने के उद्देश्य से भरहुत चित्रकला मूर्तिकला म्यूजियम, सतना में सैकड़ों 3D फोटोग्राफ, फोटो एलबम, विशालकाय नवनिर्मित प्रस्तारहर अनुकृतियाँ, प्रस्तर भाव चित्र, शिलालेख, मोनोग्राम इत्यादि को नवीन रचना के साथ प्रस्तुत किया गया है।

श्रद्धांजलि - आकाश भर सपना (कालिका प्रसाद त्रिपाठी को याद करते हुए)

सेवा राम :- सतना जिले के ग्राम जमुनिहाई 22 जुलाई 1951 में जन्मे, उच्च राज्य शिक्षा सेवा से प्राध्यापक विभागाध्यक्ष के रूप में 2016 में सेवा निवृत्त म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी में भी संचालक के रूप में सेवाएँ दी। देश के सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में 1970 से निरन्तर लेखन। प्राय: सभी प्रमुख विधाओं, कविता, निबंध, आलोचना, संपादन में सृजन हिन्दी आलोचना का एक प्रतिष्ठित नाम, 2 कविता संग्रह अंधेरे के खिलाफ, खुशबू बांटती हवा एवं 14 पुस्तको का लेखन एवं सम्पादन, आलोचना वैचारिक विमर्श काव्य संकलन, दो निबन्ध संग्रह शीघ्र प्रकाशन। वैचारिक संगोष्ठियों के प्रख्यात वक्ता।

कालिका प्रसाद त्रिपाठी जैसे पढ़ाकू और गुणी आदमी का इस तरह अलविदा कह देना इस दुनिया को सचमुच अखर गया। मेरी नज़र में यह बघेली के सामर्थ्य की और कविता के आकाश की सचमुच बहुत बड़ी क्षति है । इसे मुहावरे में न समझा जाए। वे बघेली बोली, साहित्य-संस्कृति और जीवन के गहरे जानकार रहे हैं। उनके भीतर बघेली बोली, साहित्य और समकालीन जीवन का सामर्थ्य और गुमान बोलता था। वे बघेली के विस्तार के जादूगर थे। अदंर और बाहर इसकी वे भरपूर चिंता भी करते थे। एक गंभीर प्रयोगकर्ता और बिंबों, प्रतीकों, मिथकों, रूपकों और बोली के आविष्कर्ता भी वे थे। उन जैसा बघेली को किड़मिड़ा कर चाहने वाला शायद जल्दी नहीं मिलेगा।

लोगों को अपने दिल के दिए जलाकर उनकी वास्तविकता को खोजना चाहिए। कुछ तो बघेली बोली की झुरझुरियां लेकर लपकम-लपकाई में भिड़े हैं। अपनी किताबें छपाकर, छप्पम-छप्पम खेल रहे हैं। जाहिर है कि प्रसिद्धि की कोटरियों में पलंग बिछाकर आराम फरमाने से असली मुकाम हासिल नहीं होते। हालांकि वे ऐसा करने में जुटे रहते हैं। लेकिन पूर्व में ऐसा नहीं होता था। अब तो कुछ भी संभव है और न किसी तरह की गांजा-गांजी से कोई बडे ठीहे भी नहीं मिलते। यह ज़िंदगी के जुनून का मामला है। समर्थ और ताकतवर थी बघेली में कालिका प्रसाद जी की एंट्री और उनका जीवन व्यवहार। उनमें बघेली का स्वाभिमान बोलता था। जिसके प्रयोग उन्होनें बघेली में किए भी। किसी ने समझा किसी ने नहीं। उसी तरह जैसे जंगल में मोर नाचा किसी ने देखा किसी ने नहीं।

कुछ बातें मैं बराबर नोटिस में लेता रहता था। उनका मन एक हिन्दू मन था लेकिन किसी भी रूप में संकीर्ण मानसिकता वाला नहीं। वे लिखने के मामले में स्वाभिमानी रहे हैं। प्रिय तो उन्हें कई चीज़ें थी। अक्सर मिर्ज़ा ग़ालिब की चर्चा करते थे मुझसे। शब्दों को विवेक की छलनी से छान-छान कर उपयोग करते थे। वे कविता और साहित्य के तमाशबीन नहीं थे ।

मैं उन्हें अक्सर कहा करता कि अपना कविता संग्रह लाइए। बघेली बोली साहित्य पर कोई किताब सामने लाइए। घमंड मत पालिए। वे अपनी कविताओं में अपनी आंतरिक दुनिया में वैभव की दुनिया में हमेशा मगन रहते थे। उसी में उनका डूबना उतराना था। नोक-झोंक हम दोनों के स्नेह का झरना था। विंध्यिका में उर्दू साहित्य और संस्कृति को लेकर मेरा एक आलेख छपा था। दिल खोलकर तारीफ़ की। हालांकि लोग जानते हैं वे प्रशंसा करने में काफी कृपण थे। बोले यह आपके लेखक का महत्वपूर्ण पक्ष है। अंक मिला या नहीं। मैंने कहा अभी नहीं। कहा संपादक से मैं लड़ जाऊंगा। हमारे भीतर प्यार की यह लौ-लपट हमेशा रही है। और लंबे अरसे से उनके संग-साथ से बनी थी। लुंज-पुंज मनोविज्ञान का मैं कभी हामी नहीं रहा। हमेशा सही को सही कहा और ग़लत को ग़लत। ग़लत को कोई मुझसे सही नहीं कहला सका और न कभी कहला सकता। इस चाइं-माइं के चक्कर में मैं कभी नहीं था और न रहूंगा। कुछ तो मुझसे इसी में अकड़ जाते हैं। अमूमन मैं बहुत कम स्थानों पर जा पा रहा हूं। वहीं मुझे जहां सुकून अनुभव हो और ज्ञान की प्यास में एक चुरुआ जल मिले। हाय! हलो! और कृत्रिम ज़िदगी मुझे कतई पसंद नहीं। मैं दिल मिले न मिले हाथ मिलाते रहिए का किसी तरह कायल नहीं बन पाया आज तक। शायद यही मेरा पिछड़ापन है। लोग बुराइयों की, वैमनस्य की बड़ी-बड़ी गठरियाँ लिए ठाठ से घूम रहे हैं। मेरे गुरु हरिशंकर परसाई हों या कमला प्रसाद, उन्होंने कभी भी ऐसी कोई कोशिश नहीं की । अब तो गलत-सलत का अपार धंधा चल रहा है ।

अपने आपको छिपाने की मुझमें कभी आदत नहीं रही और न उसकी ज़रूरत मैंने कभी समझी। लिखना क्या झूठ झांसे के लिए है? कुछ लेखकनुमा इसी जुगाड़ में पारंगत होने में राशन पानी

लेकर जुड़े रहते हैं। स्मरण कर रहा हूं कि किसी आयोजन में शायद जयराम शुक्ल के गांव गया था। कालिका प्रसाद के बारे में पूछ परख की वे नहीं थे । मैंने पूछा उनका घर कहां है ? किसी मित्र ने एक लड़के को साथ कर दिया । वे थे नहीं। उनकी देहरी को मत्था टेक आया।

स्मृतियां हमारे साथ यात्रा करती हैं। वे जब भी मेरे बी/14 टी.आर.एस. कॉलेज कैम्पस, रीवा के आवास पर आते। मेरी मां के चरण स्पर्श करते और आशीर्वाद लेते। कुछ लोग स्मरण आते हैं, गोमती प्रसाद विकल, बालकृष्ण शुक्ल, प्रो. रामसिया शर्मा और जबलपुर के प्रो. मलय तथा विश्वनाथ त्रिपाठी दिल्ली। याद है कि कालिका भाई घंटों तक मां के लोकगीत सुनते। अनुरोध करने पर अपने भी सुनाते। ये सब सघन यादें हैं, मेरे जीवित रहते मुझमें जीवित और जीवंत रहेंगी। देवीशरण ग्रामीण भी मां को बहुत मानते थे। उनसे बतियाते रहते थे।

कालिका प्रसाद त्रिपाठी बघेली के गहरे जानकार, ज्ञानी, सचेष्ट कविता के अद्भुत प्रयोगकर्ता और गहन संवेदना के धनी रहे हैं। बघेली का उन पर अपार प्रेम था। उसे उन्होंने खाने, कीर्ति पताका फहराने का अड्डा नहीं बनाया न कोई जरिया। उनके भारी भरकम व्यक्तित्व, कद काठी को, उनकी औकात को धीरे-धीरे लोग समझ पायेंगे। उनका अभी तक कोई कविता संग्रह नहीं आया। जल्दी ही आएगा। बघेली के विस्तार को लेकर छुटपुट उनके काग़ज़, डायरी और पत्रों में ही होगा। उनकी चिंताएं बघेली को लेकर अपार रही हैं। एक कडियल, जुझारू और संवेदना संसार के धनी कालिका प्रसाद त्रिपाठी का अलविदा होना एक लंबे काल खंड तक हमें झकझोरेगा। सचमुच यह बहुत बड़ी क्षति है। यह बात मुहावरे में नहीं कह रहा हूं। मेरी नोक-झोंक हमेशा होती रही है उनसे। ऐसे विरल, गुणग्राही मित्र का जाना मुझे अरसे तक बार-बार स्मरण आता रहेगा। पीड़ा भी देता रहेगा।

हम झूठ के भयानक उद्योग, दिखावे और कारोबार के बीच हैं। सच बार-बार चीख-चिल्ला रहा है और दुनिया झूठ की लपेटा-लपेटी में प्रशंसा की पालकी सजा रही है। कालिका प्रसाद त्रिपाठी को उनके गृह जिले में ही दोयम दर्जे का आदमी साबित करने की लगातार मुहिम अनवरत अंदर-अंदर चलती रही। कालिका किसी भी तरह सेवर नहीं रखते थे। जमकर खूंथ भी दिया करते थे। वे तथाकथित गुणियों को अपने ठेंगे पर धरते थे। कालिका की ज़िंदगी का यही रंग था। उनकी रचना यात्रा में प्रतीकों, मिथकों, रूपकों, बिंबों और जीवन की बहुस्तरीय पहचान थी ।

हिंदी और बघेली पर कालिका ने समान अधिकार से काम किया है । वे हारे हैं तो केवल तिकड़मबाजों से, ढपोरशंखियों से, दगाबाजों से और इसीलिए उस गैल से ही दूर चले गए। वे अक्सर मुझसे कहा करते, लो करते रहो अपना औना-पौना और बांट-बखरा। स्वार्थ की बिछाते रहो जाजिम। सच है कि अब लोग उन पर पी.एच.डी. करेंगे। बघेली उनकी आत्मा में बसती थी। लेकिन उनके जीते जी ऐसा हो नहीं पाया। और ऐसा नहीं होने दिया गया। मैं कहता भी था कई लोगों से और उनसे भी। उन जैसा अकड़ू जल्दी आपको नज़र नहीं आयेगा। अपनी अकड़ में वे किसी को कुछ समझते ही नहीं थे। ऐसी नीचताओं के लिए दुनिया में बहुत समय और जगह है। उनकी कुछ पंक्तियों पर ध्यान दें- **'कुछ बना कुछ नसान कस लागय/अउसरे सुनसान कस लागय/सुक्ख के सेफ तक नहीं फोरिस/ज़िंदगी बस पेनहान कस लागय।'**

कालिका जी सोचते विचारते बहुत थे। मन के भीतर नाचते गाते और उमगते बहुत थे। जाहिर है कि उनकी कविता किसी भी तरह हड़बड़ी की कविता नहीं है। वह ठोंक-बजाकर, चिलमन उठाकर, दुनिया की ख़तरनाक वास्तविकताओं का सामना करने वाली कविता है। वे अपने तमाम उम्र किस्से कहानी की तरह, सच को व्यक्त करने के लिए कुदाली की तरह रहे हैं । वे किसी की परवाह न करने वाले कवि भी रहे हैं। वे किसी पद में बंध नहीं सके। वे मेरे लिहाज़ से सिर से पैर तक निचाट और निश्चिंत कवि थे। कविता ही उनका जीवन वास्तव थी और जीवन आसव भी। उन्हें मैं समान रूप से हिंदी और बघेली बोली के अखाड़ची के रूप में देखता हूं।

कविता के लिए उनकी मुट्ठियां कभी भी बंद नहीं रहीं। उनका सोचना-विचारना-कहना चौबीसों घंटे प्रतीकों-मिथकों-रूपकों -बिंबों में और भाषा-शैली की बारीकियों में ही रहा है, लेकिन हमेशा ज़िंदगी के घमासानों में घिरा हुआ। उनकी कविता से मिलना है तो मुट्ठियां खोलनी पड़ेंगी। गिरह लगाकर उनकी कविता से न बात हो सकती न उसे किसी तरह जाना जा सकता। वे झांझ-मंजीरे और करताल बजाने वाले लोगों में से नहीं रहे। उनके बारे में विचार करते हुए मुझे राजेश जोशी की कुछ पंक्तियां ध्यान में आ रहीं हैं। **''हाथ मिलाना चाहते हो/तो मुट्ठियां खोलो/अपनी हथेली को देखो, कितनी सुंदर है/कल्पना ही सही पर पूरा ब्रह्मांड फैला है उसमें/सूर्य चन्द्र शुक्र बुध बृहस्पति और**

मंगल/आड़ी तिरक्षी न जाने/कितनी ज्यामितिक रेखाएं/मनुष्य कल्पनाएं किसी भी भाग्यवाद से ज्यादा सुंदर हैं।''

कालिका हमेशा धुरचट उड़ा देने वाले कवि रहे हैं। अपने स्वाभिमान में हमेशा तने-तने, बने-ठने। बोलते थे तो लगता था जैसे किसी ऊंचे पर्वत का कोई शिखर बोल रहा है। एक फक्कड़ाना अंदाज़ भी उनमें था। ज़िंदगी भर वे इसी अगन में झुलसते रहे। आख़िर उन्हें पहचाना किसने ? कुछ खरपतवार और पिस्सू टाइप के लोग जो उनका पासंग भी नहीं थे, वे ही बार-बार हुमकते रहे। तारीफें बटोरते रहे। कालिका भाई की कुछ पंक्तियां स्मरण करता हूं तो बार-बार उनमें डूबता उतराता हूं। कुछ सोचने को मजबूर भी होता हूं। ''**कुछ जमूरे की तरह हैं कुछ मदारी की तरह/भीड़ में हम गुम गए हैं रेज़गारी की तरह**'' उनमें कितना गुस्सा और तड़पन थी और उससे कहीं ज्यादा ज़िंदगी की अथाह प्यास थी। उनकी कविता में बिंब नहीं बिंब मालाएं बरसती थीं, बरखा की बूंदों और बौछार की तरह। ''**सत्य के गांव में झूठ की बस्तियां/कर्म के सिंधु में कागज़ी कश्तियां... आचरण से जो जितना ही जादा गिरे/उनकी उतनी ही ऊंची यहां हस्तियां... राजसत्ता का मद इतना जादा बढ़ा/सब नियम हो गए पांव की जूतियां''।**

कालिका अंतर्विरोधों को ठीक-ठीक ढंग से उजागर करते थे। ''**आंख भर गंगाजली है, कंठ भर कर प्यास है, रहनुमाओं ने कहा है मुल्क में मधुमास है।**'' कालिका का आब्जर्वेशन ग़जब का रहा है। यथार्थ को वे सक्षम तरीके से दर्ज़ करते थे। जैसे ''**चिट्ठी मिली मरे गिरधारी, आगे राम रखइया है/कच्ची कोमर जरी सियारी आगे राम रखइया है/...सोबरि-सूदक से कुछु आगे, बड़कीबा के काज रहा/लकबा मा चुरकुन महतारी आगे राम रखइया है।... बेउहर के बंधबा से खाले, तिरबेनी के गाय मरी/सगले गांव चढ़ी हत्यारी/आगे राम रखइया है''।**

कालिका की कविता में जीवन है। सतत हरापन है। शिल्प की साधना और आराधना है। कभी-कभार विकास को लेकर उनमें कुछ अस्वीकार के स्वर भी उभरे हैं। एक उदाहरण देखें। ''**मरी जोन्हैया गांव की, जबसे बिजुरी लागि/जेतबा के पिसना मरा, मरी पिसनही रागि/**'' बेहद सावधान कवि भी विकास की सहजता को कभी-कभी अनदेखा कर देता है। वे जीवन को अनेक सार्थक रंगों में देखते हैं। कभी अभाव में, कभी दरिद्रता में, कभी शोषण-उत्पीड़न में और कभी पर्यावरण के तमाम महत्वपूर्ण दायरों में। जीवन का यथार्थबोध उनके यहां बार-बार दर्ज़ हुआ है। उदाहरण देखें - ''**मंत्रों के उद्घोष में सूर्य फूंकता शंख/बदली के कंबल तले, धूप खोलती पंख/दांत बजाती जा रही, हवा झील के पास/धीरे -धीरे खुल गए, धुनके हुए कपास/धरती से आकाश तक ताने कुहरा शाल/रात शामियाना हुई, दिन जैसे रूमाल।**''

कालिका को कोइ बड़ा एक्सपोजर नहीं मिला। वे अपनी स्थानीयता में उलझ कर रह गए। जब प्रतिभाओं को तरजीह नहीं दी जाती तो उनकी तमाम विकास यात्राएं सीमाओं में ठहर जाया करती हैं। अंदर की घुटन, तड़पन ही उन्हें लगातार सील कर देती हैं। कालिका प्रसाद त्रिपाठी को एक थोथी प्रशंसा में कैद कर दिया गया और अन्दर ही अंदर उनकी छिलाई भी चलती रही। लुंज-पुंज मनोविज्ञान ने, संकीर्णताओ के खुले नाटकों ने उन्हें न घर का रहने दिया न घाट का। बघेली का एक सामर्थ्यवान कवि यूं ही चला गया। कबीर ने सच ही लिखा है- ''**कौन ठगवा नगरिया लूटल हो/ आए जम राजा पलंग चढ़ बैठा/नैनन अंसुआ टूटल हो/**'' उनकी स्मृति को नमन ।

रजनीगंधा 06, शिल्पी उपवन,
अनंतपुर, रीवा (म.प्र.) 486002

डॉ. सुमेर सिंह 'शैलेश' जिन्दगी के प्यास का सफर

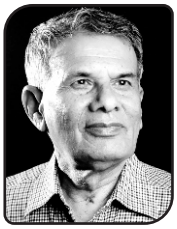

सेवाराम त्रिपाठी - परिचय - सतना जिले के ग्राम जमुनिहाई 22 जुलाई 1951 में जन्मे, उच्च राज्य शिक्षा सेवा में विभागाध्यक्ष के पद से 2016 में सेवा निवृत्त। म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी में संचालक के रूप में सेवाएँ दी। देश के सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में 1970 से निरंतर लेखन। प्राय: सभी प्रमुख विधाओं, कविता, निबंध, आलोचना, संपादन में सृजन हिन्दी आलोचना का एक प्रतिष्ठित नाम, 2 कविता संग्रह, अंधेरे के खिलाफ, खुशबू बांटती हवा एवं 14 पुस्तकों का लेखन एवं संपादन, आलोचना वैचारिक विमर्श काव्य संकलन दो निबंध संग्रह प्रकाशाधीन। वैचारिक संगोष्ठियों के प्रख्यात वक्तों।

डॉ. सुमेर सिंह शैलेश को जानते - पहचानते हुए एक जमाना हो गया। वे एक सौम्य, सुसंस्कृत व्यक्तित्व के स्वामी हैं। मेलजोल में खुलापन, सहजता, सादगी तथा शिष्टता। वे संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते रहे और अपनी एक अलग पहचान बनाई। विवादो में उलझने की उनकी प्रकृति नहीं थी। अन्तर्मुखी वे ज्यादा थे। किसी न किसी प्रसंग में लगभग पच्चीस-तीस वर्षों तक उनसे सम्बद्ध रहा हूँ। उनके मिलने-बोलने में सहजता थी, वे मितभाषी भी और उत्सव प्रेमी भी। वे सुंदर सुसज्जित और सबका भला चाहने वाले भी हैं और हमेशा आह्लादित रहने वाले भी। किसी को ढंग से जानने के लिए संस्मरणात्मक होना जरूरी है।

एक प्रसंग याद करता हूं तो अभी भी एक फुरफुरी सी अनुभव करता हूँ। बात जुलाई 1988 की है। मेरा स्थानांतरण नागौद से शासकीय महाविद्यालय सतना के लिए प्रशासनिक रूप से हुआ था और सुमेर सिंह जी का स्वेच्छा से सतना से सागर की तहसील बण्डा में स्थित महाविद्यालय के लिये। बात विचित्र है कि सतना का रहने वाला आदमी, अपनी चाहतों को पूरा करने वाला स्वेच्छा से बिना किसी लाग लपेट के क्यों सागर जाना चाहेगा ? बहरहाल ऐसा हुआ। उसके कार्य-कारण संबंधों में न जाइए। कभी-कभी घटनाएं ऐसी भी घटती हैं।

खुड़पैचिए कहां नहीं होते ? उनकी दुनिया ही इसी तरह से फलती-फूलती है, परवान चढ़ती है और लोगों को उत्तेजित करती है। खबर फैली और मेरे कानों में भी उसकी भनक पहुंची कि यह गोरखधंधा मैंने ही कराया है। यह बात भी हवा में उड़ी कि शैलेश जी मुझसे काफी खफा हैं हालांकि खफा होना उनके स्वभाव में नहीं है। तब मैं नागौद से रोज स्कूटी से सतना आता जाता था। फिर मुझे लगा कि यह स्थिति साफ होनी चाहिये। अफवाहें बहुत तेज होती हैं और न जाने क्या-क्या रूप अख्तियार कर लिया करती हैं। मैं एक दिन उनके सतना स्थित घर गया और यह बताया कि यह गोरखधंधा मेरा नहीं है। आप चाहें तो भोपाल जाकर पता करें और मैं अपनी सहमति देता हूँ कि मुझे सतना से कहीं भी स्थानांतरित कर दिया जाए। मैं जाने को सहर्ष तैयार हूँ। असली बात यह थी कि शैलेश जी के पिताश्री कैंसर के मरीज थे और उनका लगातार इलाज हो रहा था। परेशान मैं भी था क्योंकि मेरे छोटे बेटे अभिषेक का इलाज बंबई के बांबे हास्पिटल में चल रहा था। वह क्रानिक आस्टोमलाइटिस लेफ्ट टीबिया का मरीज है लेकिन शैलेश जी का सतना रहना जरूरी था। मेरा डेरा तो उठना था सतना न सही कहीं और जम जाएं। क्या हर्ज है। मैंने भी कोशिश की शैलेश जी ने भी। शैलेश सतना रह गए और मैं स्वेच्छा से रीवा आ गया।

हुआ यह कि शैलेश जी ने राग भोपाली के लहजे में जब पता किया तो उन्हें यह तथ्य मालूम हुआ कि किसी सज्जन ने भोपाल जाकर सुमेर सिंह जी के नाम से आवेदन कर दिया कि वे बंडा जाना चाह रहे हैं और सहज प्रक्रिया में उनका स्थानांतरण वहीं के लिए हो गया। खैर मामला रफा-दफा हुआ और एक सन्देह की स्थिति समाप्त हुई। कालांतर में कुछ अरसा बाद शैलेश जी का स्थानांतरण शासकीय महाविद्यालय गुढ को हुआ। तब मैं टी.आर.एस. कॉलेज रीवा में पदस्थ था। उस दौर में शैलेश जी से अक्सर मिलना होता रहा। वे गुढ़ कॉलेज से वापस लौटते हुए कभी-कभी मेरे टी. आर .एस. कॉलेज रीवा स्थित आवास में आ जाया करते थे। खूब गप्पे होती थीं। एक दूसरे से कहते सुनते थे और अपने आपको ऊर्जावान महसूस करते।

उन्होंने मुझे जानकारी दी कि साठ साल का हो रहा हूं और कुछ लोग आयोजन भी कर रहे हैं। यह मेरे लिये प्रसन्नता की बात है कि वे साठ के हो गये। ''साठा सो पाठा'' सुमेर सिंह जी मेरी नजर में अभी भी खूबसूरत थे और नौजवान भी । उनके कंठ में रागिनी थी। जब भी गीत, गजल पढ़ते, अत्यंत तन्मय होकर ही। एक विशेष अदा के साथ कवि सम्मेलनों में अक्सर उनका आना- जाना बहुत

दूर-दूर तक होता है। वहां वे अपनी रचना और कंठ की खुशबू बिखेरते रहते। जब परिचित लोग मुझे बताते तो सचमुच बहुत अच्छा लगता। मैंने उन्हें कई बार सुना भी। उनके अंदाजेबयां, स्वरलहरी और भाव-भंगिमायें मुझे आकर्षित करती थी।

उनकी एक किताब मुझे मिली- गीत गजल संकलन व गीतों के रश्मि द्वार जो राजश्री बुक सेन्टर भोपाल से 1984 में प्रकाशित हुई थी। इन गीत - गजलों में एक विशेष प्रकार की छुअन, रसमयता, एक अतिरिक्त किस्म की तरलता, किशोर मन की भावुकता का अहसास भी होता है। उनकी रचनात्मकता में रोमांटिक भाव-बोध, एक अजीब सी प्यास, एक अनकही सी थरथराहट और ऐन्द्रिकता बराबर पिरोई हुई है। यह सही है कि उनके गीत और गजल किन्हीं बड़ी चिन्ताओं को फोकस नहीं करते। वे जीवन की सहजता को ही व्यक्त करते हैं। हां, उनकी लम्बी परछाइयां आपको इर्द - गिर्द तैरती नजर आएंगी। छोटे-मोटे अहसास छोटी- छोटी चिन्तायें और हल्के-हल्के पदचाप संयमित ढंग से उनकी रचनात्मक छवियों से उभरते हैं। प्रेम की एक चाहत, एक विकल वेदना यत्र -तत्र- सर्वत्र है। तय है कि इस संकलन के बाद भी उनकी रचनाशीलता में कुछ व्यापकता और विस्तार भी पाया जाता है। शैलेश जी ने लिखा है कि- ''मैं विशुद्ध रचनाकार बना रहना चाहता हूं। सर्वथा मेरी कोशिश यही रही है कि गीत अपनी सुकुमारता, कोमलता और रागात्मकता से जुड़ा रहे। हृदय की धड़कन और सांसों के स्पंदन की तरह लयवद्ध रहे। बेमानी शब्द और प्रयोग की होड़ मूलक प्राचीर में गीत की नन्ही सी जान घुटने से बच जाए यही सजगता मुझे शिल्प के कई स्तरों में भटकाती रही है।''

शैलेश जी ने जिस दौर में लिखना शुरू किया उसमें माहेश्वर तिवारी, रमेश रंजक, बुद्धिनाथ मिश्र, गोपाल दास नीरज, मुकुट बिहारी सरोज, नईम, नचिकेता, शिव कुमार अर्चन, सोम ठाकुर, शांति सुमन और सतना के अनूप अशेष जैसे लोग रचनाशील थे। सबके अपने-अपने पदचिन्ह हैं। सबके अपने-अपने मिजाज हैं और सबकी अपनी-अपनी पहचान बनी है। गजल में दुष्यंत कुमार, रामकुमार कृषक, अदम गौड़वी जैसों ने जो मुकाम हासिल किया वह अद्भुत है। गीत नवगीत का एक परिदृश्य रहा है। जरूरी होता है कि कौन किस वस्तुस्थिति और यथार्थ को मनुष्य की संघर्षशीलता और तड़प को किस निगाह से देखता है। माहेश्वर तिवारी ने लिखा था- ''**धूप में जब भी जले हैं पाँव तुम्हारी याद आई**'' लेकिन रमेश रंजक ने उसी प्रसंग को एक विशिष्ट ढंग से और एक विराट कैनवास और निगाह से देखा और रेखांकित किया- ''**धूप में जब भी जले हैं पाँवसीना तन गया है, और आदमकद हमारा जिस्म/लोहा बन गया है।**'' कहीं न कहीं नजर चीजों को आर-पार देखने से बहुत कुछ शायरी में फर्क आता है । जैसे एक गीतकार की एक पंक्ति दस्तक दे रही है-''**एक छुअन फागुनी, पलाशबन उकेरे, मेंरा ही नाम कहीं, बांसुरिया टेरे**'' मेरी काव्य यात्रा के प्रारंभिक दौर में गीत-नवगीत से वास्ता रहा है लेकिन मैं गीत नवगीत चिल्लाता नहीं रहा। बाद में तो उस गैल से ही बाहर निकल आया । भाई रमेश रंजक से मैं कहा करता था कि आप कविताएं न लिखें, यह आपका असली मिजाज ही नहीं है। कृपा करके गीत ही लिखिये वह आपसे सधता है। कविता में हाथ मत आजमाओ दूसरे मित्र भाई शिव कुमार अर्चन से भी मैं यही कहा करता था कि कविताएं आपके मनोसंसार से मेल नहीं खाती।

गीतों के रश्मिद्वार में कुल 42 गीत गजल हैं। उनमें से कुछ का बानगी के तौर पर जायजा लिया गया। अधरों लगी प्यास की सिसकी/और दूर तक मृग तृष्णा जल /सूनापन भी मर जाता है/आकर कोई वीराना पल/रेतीले सैलाब लिए हम/छलके हैं कितना साजन में/ ''एक गीत में शैलेश जी ने इस मन: स्थिति को रेखांकित किया है कि,'' प्रिय के बिन सब कुछ सूना है- तुम बिन आंगन, चैबारे,/सारा जग सूना है,/मन सूना आँखें सूनी, यह दरपन सूना है/ ''..आज अकेला ही मेरा दु:ख, मुझसे दूना है।/'' यह आकुलता यह चाहत, यह प्यास, यह वेदना की बारम्बारता शैलेश जी कि रचनात्मकता का मूलधन है। सद्इच्छाओं के बावजूद उनकी टेर यहीं ज्यादातर मचलती हैं। एक और गीत की कुछ पंक्तियां देखें- ''**मै सनातन तृषा की भरूं आंजुरी, तुम मुझे उम्र भर प्यास देती रहो/ चिरपुरातन मिलन की गहूँ बाँसुरी, श्वास को क्षीण विश्वास देती रहो।**''

शैलेश जी कोमल कृपनाओं की पालकी पर सवार होकर गीतों के रश्मिद्वार खोलते हैं। **जैसे ''गुलमोहर अधरों पर खिलते, तेरी पलकों पर सावन है/ बाहों के झूले जब पड़ते, सांसों में ही वृंदावन है/ आज हठीली पुरवाई से बोलो, क्या कह दूँ, लगता गीतो की मेहदी से सारा तन, रच दूं/**''जाहिर है शैलेश जो भोले विश्वासों और मधुर भावनाओं के कवि हैं। सद्इच्छाएं उनके मनोसंसार का आईना है। हालांकि जिंदगी का विकट संग्राम सद्इच्छाओं मात्र से लड़ा नहीं जा सकता। उनकी

एक गजल है'' एक चर्चा है इन हवाओं में/ बिजलियां कैद है घटाओं में/ ये अमन होश में रहे कैसे /दर्द से दर्द है दवाओ में/''

शैलेश जी की शायरी का फलसफा आकर्षित करता है । उनकी कोमल भावनाएं बार-बार मचलती हैं- लगता है वे कुछ बड़ा संदर्भ उगाना चाहते है। जीवन के बड़े परिप्रेक्ष्य में कुछ बड़ा सन्दर्भ रखना चाहते हैं और एक नई तड़प पैदा करना चाहते हैं। कुछ पंक्तियां पढ़ें - ''इन उजालों में बदहवासी है/ जिंदगी रेत जैसी प्यासी है/ कैसे अभिव्यक्ति दे जमाने की/दर्द अपना नहीं सियासी है/'' इस संकलन को पढ़ते हुए अनुभव करता हूं कि गीत शैलेश की कविता की आराधना और भक्ति का सोपान है। पीड़ा उनकी चिरसहचरी है। अपने संसार की समूची परछाइयां वे गीत गजलों में खोजते हैं। कितना उन्हें मिली और कितना नहीं, यह अलग बात है। सच्ची श्रद्धा और भक्ति के साथ-उभरा एक अन्यतम उदाहरण हैं ये पंक्तियां **''गीत के शिवालय में दीप जो जले होंगे / जख्म बनके पीने में उम्र भर पले होंगे/ पीर के समुंदर में मोतियों का भ्रम कैसा /सीप में नयन होंगे अश्रु ही ढले होंगे/..सिसकियों के मेले में, याचना की गालियों में/ पूछिए थकन उनकी पाँव जो चले होंगे/''**

गीत और गजल के ऐसे आस्थावान राही शैलेश जी को साठ वर्ष पूरा करने पर सुख और संतोष का अनुभव करता हूँ। मेरी कामना है कि वे हमेशा एक सच्चे प्रेमी बने रहें और सैकड़ों वसंतों में कोयल की तरह अपनी तान छोड़ते रहें। गीत और पीड़ा से ही वे आंसुओं से इबारत लिखते हैं । उनकी पंक्तियां हैं- ''आंसुओं में जो डूब जाएगा/ गीत की चांदनी नहाएगा /दर्द के नित नए स्वयंवर स/ अपनी पीड़ा को ब्याह लाएगा/''

(2) अखबारों से और सोशल मीडिया से ज्ञात हुआ कि सुमेर सिंह शैलेश हमारा साथ छोड़ गए। अभी भी आश्चर्य चकित हूं कि गीतों गजलों में लगातार रमने वाले, उन्हें जीभर कर प्यार दुलार करने वाले शैलेश जी नहीं रहे। उनकी दो पंक्तियां स्मरण कर रहा हूं -''शायरी का मुकाम मत पूछो, कोई दीवाना चल के आएगा/शब्द की आरती सवारों तुम, जो भी आएगा सिर झुकाएगा /'' मैं भी सिर झुका रहा हूं गीत के इस राही को कभी-कभी खबरों से लड़ने का मन होता है। वे हमें भीतर तक हिला देती हैं। जाते सभी हैं, अच्छे भी बुरे भी। सबको एक न एक दिन जाना ही है।अमरौती खाकर कोई नहीं आया । राम-कृष्ण और बुद्ध भी गए। कोई भी काल की लपटों से बच नहीं सके। लगता है समय अच्छे लोगों को हमसे थोड़ा जल्दी ही छीन लेता है। मेरे आत्मीय मित्र श्री सुमेर सिंह शैलेश का बिछुड़ना कुछ इसी तरह ही हमें एक अजीब रिक्तता से भर गया। सुमेर सिंह शैलेश एक हँसमुख, सुदर्शन,भावों से भरे इंसान, प्यार से छलकते जिंदादिल और तरोताजा और खुश कर देने वाले इंसान थे। डूबकर प्यार करने वाले, आंतरिक भावों से मिलने वाले। भीतर तक छलक जाने वाले और छलका देने वाले। कहते कम उनकी आँखें ज्यादा बोलतीं थीं। उनके गीतों, गजलों में स्पर्श, सुगन्ध और चाहत का सुखद मिश्रण रहता था। वे संगीत को दिल की गहराइयों से चाहने वाले थे। कविताएं वे जीते थे और दिल से लिखते थे । उन्होंने गजलें लिखी हैं । मेरी नजर में अपनापा उनकी सबसे बड़ी पहचान रही है और संपत्ति भी। लिखना-पढ़ना और मस्त रहना यही उनकी जिंदगी का रोजनामचा रहा है। मैं विशेषणों में न जाकर उनकी आत्मीयता और सहजता को उनके गीत की कुछ पंक्तियों के साथ याद करना चाहता हूं- ''पत्थरों से भरी मुट्ठियां यहांध्बिजलियों से भरा आकाश हैध्आज अपना है क्या, कल को होगा भी क्याध्सोचकर मौन सारा इतिहास हैध्आदमी की तरह आदमी है नहींध्जिंदगी उससे कोसों हुई दूर हैध्आवरण और हैं आचरण और हैंध्व्यूह में वह फंसा कितना मजबूर हैध्घर में रहते हैं हमअजनबी की तरहध्राम से भी कठिन अपना वनवास है।''

हमारा यह समय अपने समूचे किए-धरे का रेसा- रेसा बटोर लेने का भी समय है। शैलेश जी शब्द साधक रहे हैं। यानी उन्होंने शब्दों की ही आराधना की है। उनकी चिंताओं में भारतीयता के विकृत स्वरूप को हमेशा संवारने की ही रही है। वे सत्ता व्यवस्था की लोलुपता और चारित्रिक गिरावट पर बहुत दु:खी होते थे। उनकी पंक्तियां हैं - ''क्या होगा इस देश का मेरे'' सब कुछ जाने राम गोली खाकर सो जाता है जहां विनम्र प्रणाम धर्म और आचरण हमारे ऐसे तंग हुएध् घर- आंगन-देहरी, गलियारे सब ही जंग हुए'' वे मरण के घर से भी होड़ लेने को तत्पर हैं । उनके गीत की पंक्तियां पढ़ें - ''जो अचर्चित रहे उम्र भरध् वे ही मेरे बने गीत- धन जो समय संग चल न सके ध्आज ओढ़े हुए हैं कफन ध्हो सृजन को भी चेतावनी ध् मैं मरण के भी घर होड़ लूं'' ऐसे प्यारे दुलारे और गीत गजलों के पुजारी को स्मरण करते हुए कहना चाहता हूं - ''दर्पण में देखिए तो आर पार देखिएध्चेहरे का हर चढ़ाव हर उतार देखिए/''

रजनीगंधा -06, शिल्पी उपवन
अनंतपुर, रीवा (म. प्र.)-486002